।। ओ३म् ।।

RNI/MPHIN/2009-28723
डाक पंजीयन संख्या MP/IDC/1533/2017-2019

वैदिक राष्ट्र

वेद, वैदिक साहित्य, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय अनुसंधानात्मक मासिक पत्रिका

वर्ष–1 , अंक–11 | इन्दौर, मार्च 2020 | मूल्य 30 रुपए

प्रकाशन दिनांक – 28 मार्च 2020 | डाक प्रेषण दिनांक – 30 मार्च 2020

नव सम्वत्सर प्रतिपदा

आर्य समाज स्थापना दिवस

चैत्र शुक्ल प्रथमा, 2077 विक्रमी संवत्

वेदोत्पत्ति सृष्टिसम्वत् 1972949122

की हार्दिक शुभकामनाएँ

यह नव वर्ष आपके जीवन को खुशियों से भर दें

- आज के दिन सृष्टि सम्वत् का शुभारम्भ
- चेती चांद/उगाड़ी/गुड़ी पड़वा की हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

संपादक– वैदिक राष्ट्र मासिक पत्रिका

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. एवं आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर

के तत्वावधान में 196वाँ महर्षि दयानंद सरस्वती जन्मोत्सव के अवसर पर

सम्मान समारोह

यादवेन्द्र शास्त्री (मथुरा)

पं. नीरज शर्मा

विजय गोयल (श्रद्धानंद आश्रम)

मनोज सोनी

श्रीमती शांति विद्यालंकार

सुश्री अमिता पांचाल

श्रीमती विद्या टाँक, श्रीमती शारदा चौहान श्रीमती कल्पना चौहान

कुशलव आर्य

कैलाश खण्डेलवाल (प्रसिद्ध समाज सेवी)

पवन शास्त्री (मथुरा)

प्रणवीर शास्त्री

श्रीमती सुरभि ओपाले

श्रीमती लता खरे एवं श्री छोटे लाल खरे

श्रीमती आशा देशमुख

श्रीमती आशा देशमुख

दिनेश शर्मा 'कमल'

बालकृष्ण आर्य

चैतन्य देवड़ा, दक्ष देवड़ा, लक्ष्य देवड़ा

महापंडित सुनील शर्मा

डॉ. दिनेश आर्य

दर्शन बोरडे

भीम सिंह सोलंकी

दिनेश शर्मा (कवि)

प्रशांत चौहान

॥ ओ३म् ॥

RNI/MPHIN/2009-28723
डाक पंजीयन संख्या।
MP/IDC/1533/2017-2019

वैदिक राष्ट्र (मासिक पत्रिका) ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद वयं राष्ट्रे जागृयामः

वैदिक राष्ट्र

वेद, वैदिक साहित्य, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय अनुसंधानात्मक मासिक पत्रिका

संपादक – डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार E-mail: aacharyabhanu@yahoo.com

वर्ष–11 अंक–11 मार्च 2020

❖ कार्यकारी संपादक ❖
राजवीर सिंह (झारखंड)
❖ सहसंपादक ❖
संदीप शजर (दिल्ली)
❖ प्रबंध संपादक ❖
गायत्री सोलंकी, (इन्दौर, म.प्र.)
प्रणवीर शास्त्री (बुलंदशहर, उ.प्र.)
❖ संपादक मंडल ❖
अमरसिंह वाचस्पति (ब्यावर, राजस्थान)
डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार (हरिद्वार, उत्तराखंड)
श्रीमती मनीषा (शांति) विद्यालंकार (म.प्र.)
योगाचार्य उमाशंकर (सूरत, गुजरात)।
रमेशचंद्र विद्यार्थी (हमीरपुर, उ.प्र.)
वीरेन्द्र सरदाना (दिल्ली)
सुखबीर शास्त्री (मुम्बई)
सत्यवीर (हरियाणा)
रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे, नासिक (महा.)
नोट :– सभी पद अवैतनिक हैं।
ग्राफिक्स डिजाईनर - दर्शन बोरडे

अनुक्रमणिका

संपादकीय	- 02
वेदाऽमृतम्	- 03
महर्षि दयानंद के द दलितोंउद्धार	- 04-06
निराकार ईश्वर और हम	- 07
शूरता की मिसाल-पंडित लेखराम	- 08-10
पाणिनि और महर्षि दयानंद जी की	- 11-12
मिलकर होली पर्व मनाओं	- 13
भारतीय पर्व: नवाचार-विचार	- 14-17
शोक समाचार	- 18
सगोत्र विवाह का निषेध क्यों ?	- 19
समाचार पत्रों की खबर	- 20-24
परमात्मा-जीवात्मा देवात्मा	- 25-27
मनुस्मृति में क्या है	- 28-29
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र.	- 30-32

❖ मुख्य कार्यालय ❖
219, संचार नगर एक्स, कनाड़िया रोड़, इंदौर (म.प्र.) फोन: 0731-6066067, मो. 09977967777, 09977987777, 09202213410
Email: vaidikrashtra@yahoo.com, Website: www.vaidikrashtra.com
❖ दिल्ली कार्यालय ❖
संदीप शजर – एफ-5, विनायक अपार्टमेंट बुराड़ी (संतनगर) दिल्ली, मो. 09873534060

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार द्वारा आर.टेक ग्राफिक्स 864/9, नेहरु नगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर से प्रकाशित। आर.एन.आई. नं./एम.पी.एच.आई.एन / 2009-28723

'वैदिक राष्ट्र' में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र ''इन्दौर न्यायालय'' ही रहेगा।

वैदिक संस्कृति को अपनाने से ही संसार सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो सकता है।

वैदिक संस्कृति में न केवल जीवनयापन को करने की विधि है अपितु संसार के सभी सुखों को प्राप्त करने की भी विधि बताई है। वैदिक दिनचर्या जिसमें ब्रह्ममुहर्त में उठकर ईश्वर उपासना (प्रात:कालीन मंत्र) से लेकर के रात्रि समय में शयनमंत्रों का विधान है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस **वैदिक दिनचर्या** में प्रात:काल मंत्र से प्रारम्भ होकर आसन, प्राणायाम, स्नान, ध्यान, यज्ञ (अग्निहोत्र), आयुर्वेद, सात्विक आहार-शाकाहारी भोजन, वैदिक सौलह संस्कारों का समावेश, वैदिक नैतिक शिक्षा और वेद आधारित यज्ञ-योग-ध्यान आदि शिक्षाओं का समावेश है।

आज के समय में जो **'कोरोना वायरस'** पाश्चात्य देशों के अशुद्ध आहार-विहार (गलत खान-पान) के मुख्य कारण से फैला है, यह तो एक बहुत छोटी महामारी है यह **चेतावनी** दे रही है कि यदि हमने प्राकृतिक आहार-विहार को छोड़ा और प्राकृतिक जीवन से छेड़-छाड़ की तो इससे भी **भंयकर प्रलयकारी महामारी** आयेगी। जिसमें मनुष्य मात्र को बचने का थोड़ा भी समय नहीं मिलेगा। इसलिए आओ हम इस तरह की बीमारियों, महामारियों से न केवल बचाव का सोचे अपितु ऐसी बीमारियों-महामारियों से हम हमेशा कैसे सुरक्षित रहे इस पर आज के वैज्ञानिकों को सोचना होगा ? अरे ! सोचने की क्या आवश्यकता है ? इसका समाधान तो हमारे ऋषियों महर्षियों ने स्पष्टरुप से बता दिया है कि **वैदिक संस्कृति, वैदिक दिनचर्या, वैदिक ईश्वर उपासना पद्धति** और **वैदिक दर्शन** ही इस सभी का समाधान है।

भारतीय संस्कृति के **अष्टांग योग** में **यम-नियम** के **नियम** के **प्रथम बिंदु** में स्पष्टरुप से पहला **शौच (स्वच्छता)** बताया है। चाहे वह **शौच (आंतरिक) स्वच्छता** हो या **बाह्य** स्वच्छता हो, दोनों प्रकार की ही स्वच्छता से हमारा जीवन निरोगी हो सकता है। महामारियों को रोकने के लिये **एक बिंदु** है सौलह संस्कारों में **अंतिम संस्कार**- सौलहवा संस्कार, अंत्येष्टि संस्कार है। यदि अंतिमसंस्कार के समय **मृत शरीर** को **दफनाया** जाता है, **गाढ़ा** जाता है तो वह महामारी को बढ़ावा देता है। जबकि वैदिक रीति से किया गया वैदिक संस्कार में **मंत्रों** के द्वारा **विशेष हवन सामग्री** और **घी** के माध्यम से मृत शरीर को अग्नि में अंतिम संस्कार किया जाता है। जिससे महामारी तो रुकती है और पर्यावरण भी दूषित नहीं होता है। हम अपने जीवन में प्राकृतिक आहार-विहार अर्थात् शुद्ध शाकाहारी भोजन करते है और प्रकृति को संतुलित रखते है तो ऐसी महामारी नहीं आयेगी।

यज्ञ (अग्निहोत्र) वह विधि है जिससे न केवल पर्यावरण शुद्ध रहता है अपितु सभी प्रकार के रोगों की भी निवृत्ति होती है। स्वस्थ शरीर, पवित्र मन और आध्यात्मिक जीवन यज्ञ (अग्निहोत्र) के द्वारा हमें प्राप्त हो सकता है। यदि आज के समय में पूरा संसार को छोड़े तो भी केवल मात्र भारत के व्यक्ति ही जिनकी संख्या लगभग 135 करोड़ है, उनमें से आधे व्यक्ति भी एक समय **दैनिक अग्निहोत्र, शुद्ध घी, हवन सामग्री** और **मंत्र** से करें तो निश्चित रुप से **कोरोना वायरस** ही नहीं अपितु इससे भी **भंयकर महामारी** दूर हो जायेगी। हमारे यहां भोजन बनाने में भी आयुर्वेद का ध्यान रखा जाता है कि किस भोजन में कौन-कौनसा मसाला डाला जाये, जोकि स्वास्थ के लिये हितकारी हो। प्राचीनकाल में तो प्रत्येक भारतीयों को पग-पग पर आयुर्वेद का ज्ञान था अब भी हम उसे भूले नहीं है, भले ही हम उसे कम (आयुर्वेद को) अपनाते हो इसलिये हमारे शरीर को निरोगी होने में आयुर्वेद का प्रमुख स्थान है।

वैदिक संस्कृति में प्रत्येक व्यवहार में मानवमात्र का कल्याण है- जैसे कि अभी कोरोना वायरस के समय नमस्ते हाथ जोड़कर दूर से ही अभिवादन करने का कहा जा रहा है। जबकि हमारे यहां तो आदिकाल से नमस्ते करने का एक विशेष विधान है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार से आज पूरा संसार एक महामारी से बचाव के लिये महामारी से सुरक्षित होने के लिये त्राही-त्राही कर रहा है परेशान हो रहा है। वही वैदिक संस्कृति बारम्बार वेदों के संदेशों के द्वारा कह रही है हम **शुद्ध शाकाहारी** बने। **नियमित यज्ञ अग्निहोत्र** करें। **आयुर्वेद को दैनिक जीवन** में अपनायें। यम-नियम के आठ बिंदुओं को भी समझे और जीवन में अपनाये। अष्टांग योग अर्थात् **(1) यम (2)नियम (3) आसान (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान (8) समाधी** की ओर अपने जीवन के कदम को बढ़ायें। इस प्रकार वैदिक संस्कृति को अपनाने से ही संसार सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो सकता है।

डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

वेदाऽमृतम्

मुझे सबका प्यारा बनाओ

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्यु पश्यत उत शूद्र उतार्ये ॥

–अथर्व. 19।62।1

ऋषिः– **ब्रह्मा** । देवता–**ब्रह्मणस्पतिः** ।। छन्दः– **अनुष्टुप्** ।।

विनय– हे मेरे प्यारे प्रभो! तुम मुझे सबका प्यारा बनाओ। मैं यदि सचमुच तुम्हारा प्यारा बनना चाहता हूँ तो मुझे तुम्हारे इस सब जगत् का प्यारा बनना चाहिए। तुम तो इस जगत् में सर्वत्र हो, छोटे–बड़े, ऊँचे–नीचे सभी प्राणियों में बनाकर बसे हुए हो यदि इन रुपों में मैं तुमसे प्यार न कर सकूँ तो मैं तुम्हें प्यारा कहके क्योंकर पुकार सकूँ ?

ये सांसारिक लोग बेशक अपने से बड़ों, बलवानों, धनवानों और प्रतिष्ठावालों के ही प्यारे बनना चाहते हैं, अपने से छोटों, गरीबों, दलितों और असहायों के प्यारे बनने की कोई आवश्यकता नहीं समझते। ये बेशक अपने राजाओं और स्वामियों का प्रेम पाना चाहते हैं, किन्तु अपनी प्रजा और नौकरों का प्रेम पाने की कभी इच्छा नहीं करते, परन्तु इसी में तो तुम्हारे सच्चे प्रेमी होने की परीक्षा होती है, क्योंकि इन गरीबों, पीड़ितों, असहायों का प्रेम चाहना ही असल में तुमसे प्रेम करना है।

बलियों, धनियों और राजाओं से प्रेम की इच्छा करना तो सांसारिक बल से, सांसारिक धन से, सांसारिक प्रभुत्व से प्रेम करना है, तुमसे प्रेम करना नहीं है। इसलिए मुझे तो तुम जहाँ देवों और राजाओं का प्यारा बनाओं, वहाँ इन बस देखने वाले सामान्य लोगों एक तथा नौकरी ऊँचों का, शिष्यों और गुरुओं का, सेवकों और स्वामियों का, अधीनों और अधिकारियों का, सब छोटों और बड़ों का मुझे प्यारा बनाओ ।

मुझे ऐसा बनाओ कि इस संसार में जो कोई मुझे देखे, मेरे सम्पर्क में आये, वह मुझसे प्यार करे। हे प्रभो! मैं तो तुम्हारे इस सब संसार से प्रेम की भिक्षा माँगता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि जबतक मैं तुम्हारे इस छोटे–बड़े समस्त संसार से प्रेम नहीं करूँगा तबतक, हे मेरे प्यारे ! मैं कभी तुम्हारे प्रेम का भाजन न हो सकूँगा, तुम्हारे प्रेम का अधिकारी न बन सकूँगा।

शब्दार्थ– हे प्रभो ! मा मुझे **देवेर्षु**=देवों में [ब्राह्मणों में] **प्रियं कृणु**=प्यारा करो **मा**=मुझे **राजसु**=राजाओं में क्षत्रियों में) **प्रियं कृणु**=प्यारा करो, **सर्वस्य पश्यतः**= सब देखनेवालों का भी **प्रियम्**= प्यारा करो, **उत शूद्रे**=शूद्र में भी और **उत आर्ये**= आर्य में भी, सबमें, मुझे प्यारा बनाओ।

महर्षि दयानंद के दलितोंउद्धार के कार्य
(मेरी दलित भाइयो एवं बहनो अवश्य पढ़े)

देश व समाज को जन्मना जाति व्यवस्था के अभिशाप से मुक्त कराने के लिए ऋषि दयानन्द के दलितोद्धार के प्रेरक कार्य–

वर्णव्यवस्था जन्मना है या कर्मणा । यदि उसे जन्मना माना जाय तो वह जातिगत भेदभाव को निर्माण करने का एक महत्तवपूर्ण कारण सिद्ध होती है। ऋषि दयानन्द कर्मणा वर्णव्यवस्था के पक्षधर हैं। उनकी यह धारणा थी कि जन्मना वर्णव्यवस्था तो पांच.सात पीढ़ियों से शुरु हुई हैए अतः उसे पुरातन या सनातन नहीं कहा जा सकता। अपने तार्किक प्रमाणों द्वारा उन्होंने जन्मना वर्णव्यवस्था का सशक्त खंडन किया है। उनकी दृष्टि में जन्म से सब मनुष्य समान हैंए जो जैसे कर्तव्य.कर्म करता हैए वह वैसे वर्ण का अधिकारी होता है।

अस्पृश्य अछूत–दलित शब्द का विवेचन प्रस्तुत करते हुए डॉ. कुशलदेव शास्त्री लिखते हैं कि दलितोद्धार से पूर्व दलितों के लिए सार्वजनकि सामाजिक क्षेत्र में अस्पृश्य और अछूत शब्द प्रचलित थे । एलेकिन जब समाज सुधार के बाद समाज में यह धारणा बनने लगी कि कोई भी अस्पृश्य और अछूत नहीं हैएतो धीरे.धीरे अस्पृश्य के स्थान पर दलित शब्द रुढ़ हो गया। स्वाभाविक रूप से अस्पृश्योद्धार वा अछूतोद्धार का स्थान भी दलितोद्धार ने ले लिया । मानसिक परिवर्तन ने पारिभाषिक संज्ञाओं को भी परिवर्तित कर दिया।

प्रदीर्घ समय तक सामाजिकए आर्थिक आदि दृष्टि से जिनका दलन किया गयाए कालान्तर में उन्हें ही दलित कहा गया। पंण् इन्द्र विद्यावाचस्पति के अनुसार जब यह महसूस किया जाने लगा कि शुद्धि और दलितोद्धार दोनों चीजें एक सी नहीं हैं। दलितों की हीन दशा के लिए सवर्ण समझे जानेवाले लोग ही जिम्मेदार हैंए जिन्होंने जाति के करोड़ों व्यक्तियों को अछूत बना रखा है। उन्हें मानवता का अधिकार देना सवर्णों का कर्तव्य है। इस विचार को सामने रखकर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने अछूतों के लिए दलित और अछूतों के उद्धार कार्य के लिए दलितोद्धार की संज्ञा दे दी। तभी से अछूतों की शुद्धि के संदर्भ में दलितोद्धार संज्ञा प्रचलित हो गयी।

यह बात अविस्मरणीय है कि आर्य समाज के समाज सुधार आंदोलन ने ही दलित.आन्दोलन को दलित और दलितोद्धार जैसे सक्षम शब्द प्रदान किये हैं।

महर्षि दयानन्द अपने ही नही सबके मोक्ष की चिंता करनेवाले थे। किसी जाति–सम्प्रदाय वर्ग विशेष के लिए नहींए अपितु सारे संसार के उपकार के लिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी।

सन् 1880 में काशी में एक दिन एक मनुष्य ने वर्ण व्यवस्था को जन्मगत सिद्ध करने के उद्देश्य से महाभाष्य का निम्न श्लोक प्रस्तुत कियाः–

विद्या तपश्च योनिश्च एतद् ब्राह्मण कारकम् ।
विद्या तपोभ्यां यो हीनो जाति ब्राह्मण एव सः ।। 4/1/48।।

अर्थात् ब्राह्मणत्व के तीन कारक हैं .1) विद्याए 2) तप और 3) योनि। जो विद्या और तप से हीन है वह जात्या (जन्मना) ब्राह्मण तो है ही।

ऋषि दयानन्द ने प्रतिखंडन में मनु का यह श्लोक प्रस्तुत किया–

यथा काष्ठमयो हस्तीए यश्चा चर्ममयो मृगः ।
यश्च विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रति।
मनु. (2, 157)

अर्थात् जैसे काष्ठ का कटपुतला हाथी और चमड़े का बनाया मृग होता है, वैसे ही बिना पढ़ा हुआ ब्राह्मण होता है। उक्त हाथी, मृग और विप्र ये तीनों नाममात्र धारण करते हैं।

ऋषि दयानन्द से पूर्व और विशेष रूप से मध्यकाल से ब्राह्मणों के अतिरिक्त सभी वर्णस्थ व्यक्तियों को शूद्र समझा गया था, अतः क्रमशः मुगल और आंग्ल काल में महाराष्ट्र केसरी छत्रपति शिवाजी महाराज, बड़ौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड और कोल्हापुर नरेश राजर्षि शाहू महाराज को उपनयन आदि वेदोक्त संस्कार कराने हेतु आनाकानी करनेवाले ब्राह्मणों के कारण मानसिक यातनाओं के बीहड़ जंगल से गुजरना पड़ा था।

ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः अर्थात् ज्ञानी हुए बिना इन्सान की मुक्ति संभव नहीं है। अतः ऋषि दयानन्द का दलितोद्धार की दृष्टि से भी सब से महान् कार्य यह था कि उन्होंने सबके साथ दलितों के लिए भी वेद–विद्या के दरवाजे खोल दिए। मध्यकाल मे स्त्री–शूद्रों के वेदाध्ययन पर जो प्रतिबंध लगाये गए थे,आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने मेधावी क्रांतिकारी चिंतन और व्यक्तित्व से उन सब प्रतिबंधों को अवैदिक सिद्ध कर दिया ऋषि दयानन्द के दलितोद्धार के इस प्रधान साधन और उपाय में ही उनके द्वारा अपनाये गए अन्य सभी उपायों का समावेश हो जाता है, जैसे–

1) दलित स्त्री–शूद्रों को गायत्री मंत्र का उपदेश देना। 2) उनका उपनयन संस्कार करना। 3) उन्हें होम–हवन करने का अधिकार प्रदान करना। 4) उनके साथ सहभोज करना। 5) शैक्षिक संस्थाओं में शिक्षा वस्त्र और खान पान हेतु उन्हें समान अधिकार प्रदान करना। 6) गृहस्थ जीवन में पदार्पण हेतु युवक–युवतियों के अनुसार (अंतरजातीय) विवाह करने की प्रेरणा देना आदि।

डॉ. आंबेडकर ने भी स्वीकार किया है कि–"स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वर्णव्यवस्था बुद्धि गम्य और निरूपद्रवी है।"

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के उपकुलपति,महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध वक्ता प्राचार्य शिवाजीराव भोसले जी ने अपने एक लेख में लिखा है, **राजपथ से सुदूर दुर्गम गांव में दलित पुत्र को गोदी में बिठाकर सामने बैठी हुई सुकन्या को गायत्री मंत्र पढ़ाता हुआ एकाध नागरिक आपको दिखाई देगा तो समझ लेना वह ऋषि दयानन्द प्रणीत का अनुयायी होगा।'**

आर्यसमाजी न होते हुए भी ऋषि दयानन्द की जीवनी के अध्ययन और अनुसंधान में 15 से भी अधिक वर्ष समर्पित करने वाले बंगाली बाबू देवेंद्रनाथ ने दयानन्द की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए लिखा है, 'वेदों के अनधिकार के प्रश्न ने तो **स्त्री जाति और शूद्रों को सदा के लिए विद्या से वंचित किया था और इसी ने धर्म के महंतों और ठेकेदारों की गद्दियां स्थापित की थीं, जिन्होंने जनता के मस्तिष्क पर ताले लगाकर देश को रसातल में पहुंचा दिया था।** दयानन्द तो आया ही इसलिए था कि वह इन तालों को तोड़कर मनुष्यों को मानसिक दासता से छुड़ाए।' ऋषि दयानन्द के काशी शास्त्रार्थ में उपस्थित पं. सत्यव्रत सामश्रमी ने भी स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए लिखा है, **"शूद्रस्य वेदाधिकारे साक्षात् वेदवचनमपि प्रदर्शितं स्वामि दयानन्देन यथेमां वाचं**– इति।

डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे ने लिखा है, **मध्यकाल में पौराणिकों ने वेदाध्ययन का अधिकार ब्राह्मण पुरुष तक ही सीमित कर दिया था,स्वामी दयानन्द ने यजुर्वेद के (26/2) मंत्र के आधार पर मानवमात्र को वेद की कल्याणी वाणी का अधिकार सिद्ध कर दिया ।** स्वामीजी इस यजुर्वेद मंत्र के सत्यार्थद्रष्टा ऋषि हैं।' ऋषि दयानन्द के बलिदान के ठीक 10 वर्ष बाद उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए दादा साहेब खापर्डे ने लिखा था, **स्वामीजी ने मंदिरों में दबा छिपाकर रखे गए वेद भंडार समस्त मानव मात्र के लिए खुले कर दिये।** उन्होंने हिंदू धर्म के वृक्ष को महद् योग्यता से कलम करके उसे और भी अधिक फलदायक बनाया।' "वेदभाष्य पद्धित को दयानन्द सरस्वती की देन' नामक शोध प्रबंध के लेखक डा. सुधीर कुमार गुप्त के अनुसार **'स्वामी जी ने अपने वेदभाष्य का हिंदी अनुवाद करवाकर वेदज्ञान को सार्वजनिक संपत्ति बना दिया।'** पं. चमूपति जी के शब्दों में **'दयानन्द की दृष्टि में कोई अछूत न था। उनकी दयाबल–बली भुजाओं ने उन्हें अस्पृश्यता की गहरी गुहा से उठाया और आर्यत्व के पुण्यशिखर पर बैठाया था।'**

हिंदी के सुप्रसिद्ध छायावादी महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने लिखा है **"देश में महिलाओं,पतितों तथा जाति–पांति के भेदभाव को मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द तथा आर्यससमाज से बढ़कर इस नवीन विचारों** के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया आज जो जागरण भारत में दीख पड़ता है, उसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्य समाज को है।

महाराष्ट्र राज्य संस्कृति संवर्धन मंडल के अध्यक्ष मराठी विश्वकोश निर्माता तर्क–तीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी ऋषि दयानन्द की महत्ता लिखते हुए कहते हैं, **'सैकड़ों वर्षों से हिंदुत्व के दुर्बल होने के कारण भारत बारंबार पराधीन हुआ इसका प्रत्यक्ष अनुभव महर्षि स्वामी दयानन्द ने किया।** इसलिए उन्होंने जन्मना जातिभेद और मूर्तिपूजा जैसी हानिकारक रुढ़ियों का निर्मूलन करनेवाले विश्वव्यापी महत्वाकांक्षा युक्त आर्यधर्म का उपदेश किया इस श्रेणी के दयानन्द यदि हजार वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए होते, तो इस देश को पराधीनता के दिन न देखने पड़ते । इतना ही नहीं, प्रत्युत विश्व के एक महान् राष्ट्र के रूप में भारतवर्ष देदीप्यमान होता।'

–रमेश आर्य यादव

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर (सेन्ट्रल) रुल्स 1956 के अन्तर्गत
मासिक 'वैदिक राष्ट्र' समाचार–पत्र के संबंध में स्वामित्म

घोषणा फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान : 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016
2. प्रकाशन अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
   क्या भारत का नागरिक है ? : हाँ
   यदि विदेशी हो तो मूल देश : नहीं
   पता : 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016
4. प्रकाशन का नाम : आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
   क्या भारत के नागरिक है ? : हाँ
   पता : 219, संचार नगर एक्स., कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016
5. संपादक का नाम क्या भारत के नागरिक यदि विदेशी हो तो मूल देश : नहीं
   पता : 219, संचार नगर एक्स., कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016
6. इन व्यक्तियों के नाम व पते : आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
   जो समाचार–पत्र के स्वामी : 219, संचार नगर एक्स., कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016
   हो तथा समस्त पूंजी के एक :
   प्रतिशत नहीं से अधिक
   हिस्सेदार हो

मैं आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अ नुसार दिये विवरण सत्य हैं।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
(प्रकाशक)

दिनांक - मार्च, 2020

निराकार ईश्वर और हम

प्रेरक प्रसंग

प्रसिद्ध स्पेनिश विचारक जेवियर जुबिरी एक बार बाल कटवा रहे थे। बातों ही बातों में जेवियर और नाई के बीच इस बात पर बहस छिड़ गई कि ईश्वर है या नहीं नाई का कहना था, 'अगर ईश्वर होता तो दुनिया में शांति और खुशी होती न कि हिंसा और बीमारियां। अगर वह होता तो दिखाई देता लेकिन ईश्वर तो कहीं दिखता ही नहीं है।' जेवियर का तर्क था कि ईश्वर तो कण–कण में बसा हुआ हैबस उसे खोजने वाली नजर और साफ नीयत चाहिए। बहस चलती रही और इस बीच नाई जेवियर के बाल भी काटता रहा। लोग भी इस बहस का मजा ले रहे थे। लेकिन बहस का कोई नतीजा नहीं निकला।

बाल कटवा कर जेवियर नाई की दुकान के बाहर आ गए और सड़क पर इधर–उधर टहलने लगे। तभी उन्हें बढ़े हुए बाल और खिचड़ी दाढ़ी वाला एक युवक नजर आया। वह उस युवक को पकड़ कर फिर उस नाई की दुकान पर गए। उन्होंने उस नाई से कहा, 'लगता है शहर में एक भी ढंग का नाई नहीं बचा है। इस पर नाई ने कहा, 'क्या बात करते हैं? मैं इस शहर का सबसे बढ़िया नाई हूं चारों ओर मेरे चर्चे होते हैं। इस पर जेवियर बोले अगर ऐसा होता तो इस नौजवान के बाल इतने बेढंगे क्यों हैं? इस पर नाई तपाक से बोला, 'जब कोई मेरे पास आएगा, तभी तो मैं उसके बाल काट पाऊंगा। जब कोई आएगा ही नहीं तो मैं कैसे समझूंगा कि किसके बाल बढ़े हुए हैं।

इस पर जेवियर मुस्कुरा कर बोले, 'ठीक कह रहे हो । अभी कुछ देर पहले तुम कह रहे थे कि ईश्वर है ही नहीं । अरे भाई कोई उसे खोजने जाएगा, उसका नाम लेगा, उसे पुकारेगा, उसे पाने की कोशिश करेगा, तभी तो ईश्वर मिलेगा। बिना कोई कर्म किए ईश्वर थोड़ी ही मिलेगा।' उनकी इस बात से नाई निरुत्तर हो गया।

निराकार ईश्वर सृष्टि के कण कण में विद्यमान है। हमें सदा कर्म करते हुए देख रहा हैं। इसलिए उनकी स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना करते हुए सदैव उत्तम कर्म करने का संकल्प लीजियें।

शूरता की मिसाल-पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर

(6 मार्च को पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस के अवसर पर प्रकाशित)

–डॉ. विवेक आर्य

पंडित लेखराम इतिहास की उन महान हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिएजीवन के अंतिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। आपके पूर्वज महाराजा रंजित सिंह की फौज में थे इसलिए वीरता आपको विरासत में मिली थी। बचपन से ही आप स्वाभिमानी और दृढ विचारो के थे। एक बार आपको पाठशाला में प्यास लगी। मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगीमौलवी ने जूठे मटके से पानी पीने को कहाँ । आपने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत मांगी और न ही जूठा पानी पियासारा दिन प्यासा ही बिता दिया। पढने का आपको बहुत शौक था। मुंशी कन्हैयालाल ख्धारी की पस्तकों से आपको स्वामी दयानंद जी का पता चला। अब लेखराम जी ने ऋषि दयानंद के सभी ग्रंथो का स्वाध्याय आरंभ कर दियापेशावर से चलकर अजमेर स्वामी दयानंद के दर्शनों के लिए पंडित जी पहुँच गए। जयपुर में एक बंगाली सज्जन ने पंडित जी से एक प्रश्न किया था की आकाश भी व्यापक हैं और ब्रह्मा भी, दो व्यापक किस प्रकार एक साथ रह सकते हैं ? पंडित जी से उसका उत्तर नहीं बन पाया था। पंडित जी ने स्वामी दयानंद से वही प्रश्न पूछा। स्वामी जी ने एक पत्थर उठाकर कहा की इसमें अग्नि व्यापक हैं या नहीं ? मैंने कहाँ की व्यापक हैं, फिर कहाँ की क्या मिटटी व्यापक हैं? मैंने कहाँ की व्यापक हैं, फिर कहाँ की क्या जल व्यापक हैं? मैंने कहाँ की व्यापक हैं। फिर कहाँ की क्या आकाश और वायु ? मैंने कहाँ की व्यापक हैं, फिर कहाँ की क्या परमात्मा व्यापक हैं? मैंने कहाँ की व्यापक हैंफिर स्वामी जी बोले कहाँ की देखो। कितनी चीजें हैं परन्तु सभी इसमें व्यापक हैंवास्तव में बात यहीं हैं की जो जिससे सूक्षम होती हैं वह उसमे व्यापक हो जाती हैं। ब्रह्मा चूँकि सबसे अति सूक्षम हैं इसलिए वह सर्वव्यापक हैं। यह उत्तर सुन कर पंडित जी की जिज्ञासा शांत हो गयीआगे पंडित जी ने पुछा जीव ब्रह्मा की भिन्नता में कोई वेद प्रमाण बताएँ । स्वामी जी ने कहाँ यजुर्वेद का ४० वां अध्याय सारा जीव ब्रह्मा का भेद बतलाता हैं। इस प्रकार अपनी शंकाओ का समाधान कर पंडित जी वापस आकार वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लग गए।

शुद्धि के रण में– कोट छुट्टा डेरा गाजी खान (अब पाकिस्तान) में कुछ हिन्दू युवक मुस्लमान बनने जा रहे थे। पंडित जी के व्याख्यान सुनने पर ऐसा रंग चड़ा की आर्य बन गए और इस्लाम को तिलांजलि दे दीइनके नाम थे महाशय चोखानंद, श्री छबीलदास व महाशय खूबचंद जी, जब तीनो आर्य बन गए तो हिन्दुओं ने उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया। कुछ समय के बाद महाशय छबीलदास की माता का देहांत हो गया। उनकी अर्थी को उठाने वाले केवल ये तीन ही थे। महाशय खूबचंद की माता उन्हें वापस ले गयी। आप कमरे का ताला तोड़ कर वापिस संस्कार में आ मिले तीनो युवको ने वैदिक संस्कार से दाह कर्म कियापौराणिको ने एक चल चली यह प्रसिद्ध कर दिया की आर्यों ने माता के शव को भुन कर खा लिया हैं। यह तीनो युवक मुसलमान बन जाये तो हिन्दुओं को कोई फरक नहीं पड़ता था परन्तु पंडित लेखराम की कृपा से वैदिक धर्मी बन गए तो स प्रकार की मानसिकता के कारण तो हिन्द आज भी गलामी की मानसिकता में जी रहे हैं।

जम्मू के श्री ठाकुरदास मुस्लमान होने जा रहे थे। पंडित जी उनसे जम्मू जाकर मिले और उन्हें मुसलमान होने से बचा लिया।

१८९१ में हैदराबाद सिंध के श्रीमंत सूर्यमल की संतान ने इस्लाम मत स्वीकार करने का मन बना लिया। पंडित पूर्णानंद जी को लेकर आप हैदराबाद पहुंचे। उस धनी परिवार के लड़के पंडित जी से मिलने के लिए तैयार नहीं थेपर आप कहाँ मानने वाले थे। चार बार सेठ जी के पुत्र मेवाराम जी से मिलकर यह आग्रह किया की मौल्वियो से उनका शास्त्रार्थ करवा दे मौलवी सय्यद मुहम्मद अली शाह को तो प्रथम बार में ही निरुत्तर

कर दिया। उसके बाद चार और मौल्वियो से पत्रों से विचार किया। आपने उनके सम्मुख मुस्लमान मौल्वियो को हराकर उनकी धर्म रक्षा की। वही सिंध में पंडित जी को पता चला की कुछ युवक ईसाई बनने वाले हैं। आप वहा पहुच गए और अपने भाषण से वैदिक धर्म के विषय में प्रकाश डाला। एक पुस्तक आदम और इव पर लिख कर बांटी जिससे कई युवक ईसाई होने से बच गए।

गंगोह जिला सहारनपुर की आर्यसमाज की स्थापना पंडित जी से दीक्षा लेकर कुछ आर्यों ने १८८५ में करी थी। कुछ वर्ष पहले तीन अग्रवाल भाई पतित होकर मुस्लमान बन गए थे। आर्य समाज ने १८६४ में उन्हें शुद्ध करके वापिस वैदिक धर्मी बना दिया। आर्य समाज के विरुद्ध गंगोह में तूफान ही आ गया। श्री रेह्तूलाल जी भी आर्यसमाज के सदस्य थे। उनके पिता ने उनके शुद्धि में शामिल होने से मन किया पर वे नहीं माने। पिता ने बिरादरी का साथ दिया उनकी पुत्र से बातचीत बंद हो गयी। पर रेह्तुलाल जी कहाँ मानने वाले थे उनका कहना था गृह त्याग कर सकता हूं पर आर्यसमाज नहीं छोड़ सकता हूँ। इस प्रकार पंडित लेखराम के तप का प्रभाव था की उनके शिष्यों में भी वैदिक सिद्धांत की रक्षा हेतु भावना कूट–कूट कर भरी थी।

घासीपुर जिला मुज्जफरनगर में कुछ चौधरी मुस्लमान बनने जा रहे थे। पंडित जी वह एक तय की गयी तिथि को पहुँच गए। उनकी दाड़ी बढ़ी हुई थी और साथ में मुछे भी थी। एक मौलाना ने उन्हें मुस्लमान समझा और पूछा क्यों जी यह दाढ़ी तो ठीक हैं पर इन मुछो का क्या राज हैं पंडित जी बोले **दाढ़ी तो बकरे की होती हैं मूछे तो शेर की होती हैं।** मौलाना समाज गया की यह व्यक्ति मुस्लमान नहीं हैं। तब पंडित जी ने अपना परिचय देकर शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। सभी मौलानाओ को परास्त करने के बाद पंडित जी ने वैदिक धर्म पर भाषण देकर सभी चौधरियो को मुस्लमान बन्ने से बचा लिया।

१८६६ की एक घटना पंडित लेखराम के जीवन से हमें सर्वदा प्रेरणा देने वाली बनी रहेगीपंडित जी प्रचार से वापिस आये तो उन्हें पता चला की उनका पुत्र बीमार हैं। तभी उन्हें पता चला की मुस्तफाबाद में पांच हिन्दू मुस्लमान होने वाले हैं। आप घर जाकर दो घंटे में वापिस आ गए और मुस्तफाबाद के लिए निकल गए आपने कहा की **मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पांच पत्र अधिक प्यारे हैं। पीछे से आपका सवा साल का इकलोता पुत्र चल बसा।** पंडित जी के पास शोक करने का समय कहाँ था। आप वापिस आकर वेद प्रचार के लिए वजीराबाद चले गए।

पंडित जी की तर्क शक्ति गजब थी। आपसे एक बार किसी ने प्रश्न किया की हिन्द इतनी बड़ी संख्या में मुस्लमान कैसे हो गए। अपने सात कारण बताये । **१. मुस्लमान आक्रमण में बलातपूर्वक मुसलमान बनाया गया। २. मुसलमानी राज में जर, जोरू व जमीन देकर कई प्रतिष्ठित हिन्दुओ को मुस्लमान बनाया गया । ३. इस्लामी कल में उर्दू, फारसी की शिक्षा एवं संस्कृत की दुर्गति के कारण बने । ४. हिन्दुओं में पुनर्विवाह न होने के कारण व सती प्रथा पर रोक लगने के बाद हिन्दू औरतो ने मुस्लमान के घर की शोभा बढाई तथा अगर किसी हिन्दू युवक का मुस्लमान स्त्री से सम्बन्ध हुआ तो उसे जाति से निकल कर मुस्लमान बना दिया गया। ५. मूर्तिपूजा की कुरीति के कारण कई हिन्दू विधर्मी बने । ६. मुसलमानी वेश्यायो ने कई हिन्दुओं को फंसा कर मुस्लमान बना दिया । ७. वैदिक धर्म का प्रचार न होने के कारण मुस्लमान बने।**

अगर गहराई से सोचा जाये तो पंडित जी ने हिन्दुओं को जाति रक्षा के लिए उपाय बता दिए हैं, अगर अब भी नहीं सुधरे तो हिन्दू कब सुधरेगे पंडित जी और गुलाम मिर्जा अहमद– पंडित जी के काल में कादियान, जिला गुरुदासपुर पंजाब में इस्लाम के एक नए मत की वृद्धि हुई जिसकी स्थापना मिर्जा गुलाम अहमद ने करी थी। इस्लाम के मानने वाले मुहम्मद साहिब को आखिरी पैगम्बर मानते हैं, मिर्जा ने अपने आपको कभी कृष्ण, कभी नानक, कभी ईसा मसीह कभी इस्लाम का आखिरी पैगम्बर घोषित कर दिया तथा अपने नवीन मत को चलने के लिए नई नई भविष्यवाणियां और इल्हामो का ढोल पीटने लगा।

एक उदाहरण मिर्जा द्वारा लिखित पुस्तक "वही हमारा कृष्ण" से लेते हैं इस पुस्तक में लिखा हैं– उसने (ईश्वर ने) हिन्दुओं की उन्नति और सुधार के लिए निश्कलंकी अवतार को भेज दिया हैं जो ठीक उस युग में आया हैं जिस युग की कृष्ण जी ने पहले से सूचना दे रखी हैं उस निष्कलंक अवतार का नाम मिर्जा गुलाम अहमद हैं जो कादियान जिला गुरुदासपुर में प्रकट हुए हैं। खुदा ने उनके हाथ पर सहस्त्रो निशान दिखाये हैं। र इमान लेट हैं उनको खुदा ताला बडा नर बख्शता हैं। उनकी प्रार्थनाए सुनता हैं और उनकी सिफारिश पर लोगो के कास्ट दूर करता हैं, प्रतिष्ठा देता हैं आपको चाहिए की उनकी शिक्षाओ को पढ़ कर नूर प्राप्त करे । यदि कोई संदेह हो तो परमात्मा से प्रार्थना करे की हे परमेश्वर? यदि यह व्यक्ति जो तेरी और से होने की घोषणा करता हैं और अपने आपको निष्कलंक अवतार कहता हैं। अपनी घोषणा में सच्चा हैं तो उसके मानने की हमे शक्ति प्रदान कर और हमारे मन को इस पर इमान लेन को खोल दे । पुन आप देखेगे की परमात्मा अवश्य आपको परोक्ष निशानों से उसकी सत्यता पर निश्चय दिलवाएगातो आप सत्य ह्रदय से मेरी और प्रेरित हो और अपनी कठिनाइयों के लिए प्रार्थना करावे अल्लाह ताला आपकी कठिनाइयों को दूर करेगा और मुराद पूरी करेगा। अल्लाह आपके साथ हो। **पृष्ठ ६,७.८ वही हमारा कृष्ण ।** पाठकगण स्वयं समझ गए होंगे की किस प्रकार मिर्जा अपनी कुटिल नीतिओ से मासूम हिन्दुओं को बेवकूफ बनाने की चेष्ठा कर रहा था पर पंडित लेखराम जैसे रणवीर के रहते उसकी दाल नहीं गली । पंडित जी सत्य असत्य का निर्णय करने के लिए मिर्जा के आगे तीन प्रश्न रखे।

१. पहले मिर्जा जी अपने इल्हामी खुदा से धारावाही संस्कृत बोलना सीख कर आर्यसमाज के दो सुयोग्य विद्वानों पंडित देवदत शास्त्री व पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा का संस्कृत वार्तालाप में नाक में दम कर दे।

२. ६ दर्शनों में से सिर्फ तीन के आर्ष भाष्य मिलते हैं। शेष तीन के अनुवाद मिर्जा जी अपने खुदा से मंगवा ले तो मैं मिर्जा के मत को स्वीकार कर लूँगा।

३. मुझे २० वर्ष से बवासीर का रोग हैं यदि तीन मास में मिर्जा अपनी प्रार्थना शक्ति से उन्हें ठीक कर दे तो में मिर्जा के पक्ष को स्वीकार कर लूँगा। पंडित जी ने उससे पत्र लिखना जारी रखा। तंग आकर मिर्जा ने लिखा की यहीं कादियान आकार क्यों नहीं चमत्कार देख लेते। सोचा था की न पंडित जी का कादियान आना होगा और बला भी टल जाएगी। पर पंडित जी अपनी धुन के पक्के थे मिर्जा गुलाम अहमद की कोठी पर कादियान पहुँच गएदो मास तक पंडित जी कादियान में रहे पर मिर्जा गुलाम अहमद कोई भी चमत्कार नहीं दिखा सका। इस खीज से आर्यसमाज और पंडित लेखराम को अपना कट्टर दुश्मन मानकर मिर्जा ने आर्यसमाज के विरुद्ध दुष्प्रचार आरंभ कर दिया। मिर्जा ने ब्राहिने अहमदिया नामक पुस्तक चंदा मांग कर छपवाई। पंडित जी ने उसका उत्तर तकजीब **ब्राहिने अहमदिया** लिखकर दिया। मिर्जा ने **सुरमाये चश्मे आर्या (आर्यों की आंख का सुरमा)** लिखा जिसका पंडित जी ने उत्तर **नुस्खाये खब्ते अहमदिया (अहमदी खब्त का ईलाज)** लिख कर दिया। मिर्जा ने **सुरमाये चश्मे आर्या में यह भविष्यवाणी करी की एक वर्ष के भीतर पंडित जी की मौत हो जाएगी। मिर्जा की यह भविष्यवाणी गलत निकली और पंडित इस बात के ११ वर्ष बाद तक जीवित रहे।** पंडित जी की तपस्या से लाखों हिन्दू युवक मुस्लमान होने से बच गए। उनका हिन्दू जाती पर सदा उपकार रहेगापंडित जी का अमर बलिदान– मार्च १८६७ में एक व्यक्ति पंडित लेखराम के पास आया उसका कहना था की वो पहले हिन्दु था बाद में मुस्लमान हो गया अब फिर से शुद्ध होकर हिन्दू बनना चाहता हैं वह पंडित जी के घर में ही रहने लगा और वही भोजन करने लगा। ६ मार्च १८६७ को पंडित जी घर में स्वामी दयानंद के जीवन चरित्र पर कार्य कर रहे थेतभी उन्होंने एक अंगराई ली की उस दुष्ट ने पंडित जी को छुरा मर दिया और भाग गया। पंडित जी को हस्पताल लेकर जाया गया जहाँ रात को दो बजे उन्होंने प्राण त्याग दिए पंडित जी को अपने प्राणों की चिंता नहीं थी उन्हें चिंता थी तो वैदिक धर्म की । उनका आखिरी सन्देश भी यही थे की "तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बंद नहीं होना चाहिए" पंडित जी का जीवन आज के हिन्दू युवको के लिए प्रेरणा दायक हैं की कभी विधर्मियो से डरे नहीं और जो निशक्त हैं उनका सदा साथ देवे।

पाणिनि और महर्षि दयानंद जी की वंशवदा श्रद्धेया- आर्य विदुषी डॉ. प्रज्ञा देवी जी

(05 मार्च 1937 – जन्मदिन विशेष)

पाणिनि और महर्षि दयानन्द जी की वंशवदा श्रद्धेया आर्य विदुषी डॉ. प्रज्ञा देवी जी का जन्म 5 मार्च 1937 को मध्यप्रदेश के सतना जिले के कोलगवाँ नामक ग्राम में श्री कमला प्रसाद आर्य के यहाँ हुआ था। आपकी माताजी का नाम श्रीमती हरदेवी जी आर्य था। 1954 में श्री कमला प्रसाद जी का स्वर्गवास मात्र 46 वर्ष की आयु में हो गया तो माता हरदेवी जी ने ही सारे बच्चों को वाराणसी ले जाकर पण्डित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के सुपुर्द कर दिया। एक बार की बात है की रीवा राज्य मध्य प्रदेश के नरेश श्री गुलाब सिंह जी की महारानी ने दरबार में की इच्छा व्यक्त की। एक मस्लिम दरबारी ने महारानी को माता–हरदेवी जी के दर्शन करने का सुझाव दिया व महारानी ने माता हरदेवी जी के दर्शन किये ऐसे माता–पिता के घर जन्मी व पलीं थीं डॉ. प्रज्ञा देवी जी।

डॉ. प्रज्ञा जी का अध्ययन काशी के महापण्डित गुरुवर्य पूज्य ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के निकट हुआ। जहाँ रहकर आपने वेद, वेदांग, दर्शन, महाभाष्य, निरुक्त आदि ग्रन्थों का विशद् अध्ययन किया 1969 इस्वी में आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से "विद्यावारिधि" की उपाधि प्राप्त की। 08 जुलाई 1971 को आपने काशी में जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। 1972 में इस विद्यालय का विधिवत् उद्घाटन हुआ। यहाँ कन्याओं के संस्कृत अध्ययन की सुचारू व्यवस्था की गयी। वेद, व्याकरण, दर्शन तथा अन्य प्राचीन वैदिक शास्त्रों की उच्चस्तरीय शिक्षा का यह एक प्रमुख केन्द्र है।

आपने आजीवन कठोर ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर अपनी छोटी बहन यज्ञमयी–माता आचार्य मेधादेवी के साथ जीवन बिताया, जिसके परिणामस्वरुप विद्यालय (गुरुकुल) में अनेक कन्याओं को सुयोग्य विदुषी बनाने का यज्ञ पूर्ण हो सका। दोनों बहनों की मार्मिक कार्य प्रणाली ऐसी थी जिसका आलंकारिक–वर्णन सामवेद के मन्त्र संख्या 1751 में मिलता है, दोनों में कोई वैमत्य नहीं, द्वैध भाव नहीं, एक प्राण दो शरीर थे। उल्लेखनीय है विद्वान पूज्य आचार्य सुद्युम्न जी आपके भाई हैं व वैदिक धर्म के विलक्षण विभूति हैं।

वाराणसी में जब काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मनाई जा रही थी तब पुरी के शंकराचार्य निरन्जन देव तीर्थ ने आर्य समाज को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा था तब पूज्या डॉ प्रज्ञा देवी जी ने गर्जना की थी **"बेटी तो दयानन्द की हूँ। शंकराचार्य की दृष्टि में तो पाँव की जूती हूँ। आज जूती और शंकराचार्य के मध्य शास्त्रार्थ होगा तब पता चलेगा कि पाँव की जूती उछल कर कहाँ पड़ती है"।** ऐसी निर्भीक एवं शास्त्रों में निष्णात थीं।

प्रज्ञावान् पुरुष दीर्घायु नहीं होते यह बात डॉ. प्रज्ञा देवी जी के लिए भी सिद्ध हुई 06 दिसम्बर 1995 के दिन रात्रि 7 बजे, ज्ञानदीपिका डॉ. प्रज्ञा देवी जी का निधन हुआ जिसके बाद गुरुकुल का संचालन विदुषी आचार्या मेधादेवी जी ने कुशलता से किया।

पाणिनि–मन्दिरम्ः– काशी में अनेक मन्दिर हैं जिनमें विविध देवी–देवता पूजे जाते हैं। इन मन्दिरों में एक है मानस मन्दिर जिसमें रामचरित मानस की हर चौपाई/दोहे को संगमरमर पर उकेरा गया है। डॉ. प्रज्ञा देवी जी की भी इच्छा थी की एक मन्दिर अष्टाध्यायी के प्रत्येक सूत्र को संगमरमर पर उकेर कर बनाया जाये लेकिन यह स्वप्न ही रह गया आपके इस स्वप्न को पूर्ण किया आपकी छोटी बहन आचार्या मेधादेवी जी व आचार्या नन्दिता जी ने और आज यह मन्दिर अपने भव्य रूप में सबके लिए दर्शनीय है जिसमें अनेक कार्यशालायें आयोजित होती हैं और अनेकों को प्रेरणा देता है। बिना किसी मूर्ति के इस मन्दिर में पाणिनि जी आज भी देखे जा सकते हैं।

नारीरत्ना स्नेहमयी प्रज्ञादेवी जी के जीवन की एक घटना बहुत प्रसिद्ध है। **एक सुदामा नामक डाकू आपके प्रवचन सुन कर संन्यासी बन गया ।** सात्त्विकता की विरल मूर्ति डाकू से वैदिक विद्वान् तक का जीवन पूजनीया प्रज्ञादेवी जी की वाणी का ही प्रभाव था । (इस घटना को मैंने स्वयं उनके ही श्री मुख से सुना है।) लेखन कार्य :—

१) मन्त्र मालिका (1983),
२) देवसभा (1983),
३) उरुधारा नारी (1985), (नारी सन्दर्भित 500 मन्त्र तथा नारीवाचक 100 नामों को आधार बनाकर शोध निबन्ध)
४) स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश व्याख्यानमाला (1987),
५) नवग्रहों का शुभागमन (1988),
६) अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय खण्ड (पण्डित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु कृत अष्टाध्यायी भाष्य के अवशिष्टान्श— 1968)
७) अथर्ववेद भाष्य (पण्डित क्षेमकरणदास त्रिवेदी कृत भाष्य 1—4 काण्ड पर्यन्त का सम्पादन कर पुनर्प्रकाशन)
८) गोपथ ब्राह्मण पर पण्डित क्षेमकरणदास त्रिवेदी कृत भाष्य का सम्पादन कर पुनर्प्रकाशन आपके गहन पाण्डित्य को पदे—पदे प्रमाणित करता है ।

साभार :—
१) आर्य लेखक कोश, डॉ. भवानीलाल जी भारतीय, पृष्ठ 146—147
२) प्रस्तवन ज्ञापिका मैं विश्वप्रिय सौभाग्यशाली हूँ की डॉ. प्रज्ञादेवी जी के न केवल साक्षात् दर्शन परन्तु आपकी प्रेरणा को पा सका द्वा सुपर्णा (ऋग्वेद 1—164—20) जब मैंने आपनी बाल्य अवस्था में सुनाया था तब आपका आशीर्वाद प्राप्त हुआ था । आपके भी कारण मैं वेदानुरागी बन पाया मेरा सौभाग्य है की आप मेरी मौसी जी थीं और आपका स्नेह प्राप्त कर सका । मेरा शत शत नमन है।

॥ ओ३म् ॥

रिश्ते सर्वजातीय रिश्ते

सर्व ब्राह्मण, सर्व राजपूत (क्षत्रिय), सर्व वैश्य, अग्रवाल माहेश्वरी, जैन सिक्ख, बौद्ध, गुजराती, महाराष्ट्रीयन पंजाबी, सिंधी, मारवाड़ी, बंगाली, मराठा, यादव, कायस्थ, सोनी, वर्मा, सेन एवं समस्त पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (OBC, SC, ST) आदि के (समस्त हिन्दू समाज के) युवक - युवतियाँ अविवाहित, विधवा / विधुर, तलाकशुदा प्रौढ़, विकलांग (अस्थिबाधित, दृष्टिबाधित, मूकबधिर आदि) वैवाहिक रिश्तों हेतु संपर्क कर, परस्पर स्व - स्व (अपने - अपने) गुण, कर्म, स्वभाव का उत्तम चयन कर, दिव्य वैदिक श्रेष्ठतम जीवन को प्राप्त करें।

समस्त हिन्दू समाज के अविवाहित, विधवा / विधुर, तलाकशुदा, विकलांग आदि वैवाहिक संबंधों हेतु बायोडाटा - फोटो भेज कर शीघ्र संपर्क करें।

संपर्क : आर्य समाज मंदिर 219, संचार नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016
मो. 9977957777, 9977987777, www.vedicparinay.com | E-mail: aryasamajindore@yahoo.com

मिलकर होली पर्व मनाओं

सकल विश्व के सब नर–नारी, मिलकर होली पर्व मनाओ।
प्यार प्रेम का रंग वर्षाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ।।

फाल्गुन मास पूर्णिमा के दिन, यह त्यौहार मनाते हैं सब ।
हलवा, पूरी, खीर, पकोड़े, बड़े चाव से खाते हैं सब ।।

नीला, पीला, हरा, गुलाबी, लाल रंग वर्षाते हैं सब।
ईश्वर भक्त, सदाचारी, सत्कर्मी मौज उड़ाते हैं सब ।।

नशेबाज हैं जो नर–नारी, उनके सब दुर्व्यसन छुड़ाओ।
प्यार प्रेम का रंग वर्षाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ।१।।

याद रखो, अय दुनिया वालो, नव संस्येष्टि यज्ञ है होली।
आर्य पर्व है, वेद पढ़ो तुम, करो न कभी गन्दी ठिठोली ।।

बातों में मिश्री सी घोलो, सबसे बोलो मीठी बोली।
दान करो, दानी बन जाओ, युवक–युवतियों की सब टोली ।।

दुखियों दीन अनाथ–जनों को खुश होकर के गले लगाओ
प्यार प्रेम का रंग वर्षाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ।।२ ।।

चोरी करना, जुआ खेलना, बुरे काम माने जाते हैं।
मांसाहारी दुष्ट–शराबी, कहीं नहीं आदर पाते हैं ।।

धर्म–द्रोही, धूर्त नास्तिक, नफरत से देखे जाते हैं।
चरित्रहीन व्यभिचारी गुण्डे, मार सदा जग में खाते हैं ।।

जो वैदिक पथ भूल गए हैं, उनको वैदिक मार्ग बताओ।
प्यार प्रेम का रंग वर्षाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ।।

जगतपिता जगदीश्वर का, अहसान भुलाना महापाप है।
अच्छी संगति तज गन्दी संगत अपनाना महापाप है।।

ईश्वर भक्तों, विद्वानों की, हँसी उड़ाना महापाप है।
पर धन, पर नारी पर सुन लो, कुदृष्टि लगाना महापाप है।।

त्यागी सन्त तपस्वी हैं, जो उनको खुश हो, शीश नवाओ।
प्यार प्रेम का रंग वर्षाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ।।

अण्डे, मछली, मुर्गा, तीतर, बकरा खाना महापाप है।
मानवता के हत्यारों का, साथ निभाना महापाप है।।

श्रीकृष्ण जैसे योगी को, दोष लगाना महापाप है।
गोपी वल्लभ, राधा प्रेमी, चोर बताना महापाप है।।

ढोंगी पाखण्डी, गुण्डों की, पोल खोल दो आगे आओ ।
प्यार प्रेम का रंग वर्षाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ।।

परोपकारी बनो साथियो! मानव हो मानवता धारो।
निद्रा त्यागो, होश संभालो, राम कृष्ण के पुत्र दुलारो।।

आए हो किस लिए जगत में, बैठ तनिक एकांत विचारो।
अगर मारना है तुमको तो, बुरी भावनाओं को मारो।।

"नन्दलाल निर्भय" दुनिया में, अपना नाम अमर कर जाओ।
प्यार प्रेम का रंग वर्षाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ।।

भारतीय पर्व: नवाचार-विचार

प्रवेशिका– विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पंचतंत्र' में मन्दबुद्धि राजकुमारों को बुद्धिमान बनाने के लिए कतिपय बोध–कथायें लिखी गयी है। उनमें से एक कथा की झलक आपको दिखाते हैं। परिवार के चार भाई, तीन बाहर जाकर ज्ञानार्जन से विशेषज्ञ वैज्ञानिक बन गये, एक घर पर अल्पपठित ही रह गया। एक बार किसी पर्व पर चारों, ग्राम में एकत्र हुए, अवकाश के क्षणों में चारों जंगल–भ्रमण पर निकल पड़े। तीनों विशेषज्ञ अपनी अपनी योग्यता को बखान करके फूले नहीं समा रहे थे। तभी उन्हें बिखरी पड़ी हई अस्थियाँ दिखाई दी। अस्थि विशेषज्ञ बोला– "मेरे अस्थिज्ञान का कमाल है, इसलिए उन अस्थियों को व्यवस्थित करके उस पशु का ढांचा खड़ा कर दिया, जिसकी वे अस्थियाँ थी। दूसरे रसायनज्ञ भाई ने उस ढाँचे पर मृदा–मांस का लेपन कर दिया। अब वह पशु सह सही रूप में सामने खड़ा हो गया। तीसरा भाई प्राण–क्रिया विशेषज्ञ बोला– "मैं भी आप लोगों से कछ कम नहीं हूँ। देखिये चुटकी में ही मैं इस पशु में प्राणों का संचार कर देता हूँ।" चौथा बोला"भाइयों यहीं पर रुक जाइये। विद्या के अहंकार को भल जाइये।" तीनों भाई ठहरे विषय–वैज्ञानिक वे अपने भोले भाई का परामर्श माने या अहंकार को ताने! नवाचार से परिपूर्ण व्यवहारिक चौथा भाई पेड़ पर चढ़ गयाप्राण–क्रिया विशेषज्ञ भाई ने उस पशु में जैसे ही प्राण प्रतिष्ठ किये, तो शेर जीवित हो गया; और अपनी क्षुधा को तृप्ति के सहज सलभ तीन–तीन सामने खड़े शिकार देख वह विशेषज्ञों की ओर झपट पड़ा। अस्तु परिस्थिति जन्य नवाचार के बिना कोई भी आविष्कार अधूरा है ।

राजस्थान में ग्रामीण गृहणियों को धुयें से होने वाले नेत्र रोग व कैंसर से बचाने के लिए धूम्र रहित चूल्हों का आविष्कार किया गया। शासन की ओर से निर्मूल्य या अमूल मूल्य में उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में वितरित किया गया। प्रयोगशाला के पात्रों के लिए चूल्हे सकल थे, किन्तु परिवारों के पात्रों के लिये वे चूल्हे अनुपयुक्त थे। व्यर्थ पड़े रहते थे। एक महिला ने नवाचार बुद्धि का प्रयोग करते हुए चूल्हों के धन ईंधन प्रवेश के पाइप को तोड़कर चौड़ा कर दिया। उसमें अधिक जलावन जाने से वे चूल्हे बड़े पात्रों के लिए उपयोगी हो गये यह है आविष्कार को नवाचार की देन।

उत्प्रेरिका– विशिष्ट व्यवस्थित ज्ञान ही विज्ञान कहलाता है। वृष्टिकृष्टि सृष्टि को प्रांजल रूप प्रदान करना इसका कार्य है। वैज्ञानिक–आविष्कारों एवं उनके नवाचारों के भाँति पर्यों के परिष्कारों द्वारा ही मानव सभ्यता का चरमोत्कर्ष संभव हुआ है। पर्व शब्द की व्युत्पत्ति 'पर्व पूरणे' धातु से होती हैं 'पार्वति परयति जनाना नन्देनेति पर्व' अर्थात् जिससे दृढ़ता, पारपूणता, मानवीय आनन्द की वृद्धि हो–वही पर्व कहलाता है। पर्व का सीधा सा अर्थ है दृ ग्रन्थि या गाँठ । जैसे दूर्वा घास की लम्बाई व रसमयता; अथवा ईंख की रसमयता व मधुरता इनकी गाँठों के कारण होती हैं; उसी प्रकार मानव जाति की ओजस्विता, दीर्घायु एवं सुख सौम्यता इन व होता है। 'पर्व' शब्द के अन्तर्गत संस्कार एवं उत्सव का सहज समावेश होता है। संस्कार एक व्यक्ति में निखार लाते हैं; पर्व परिवार में सुख सुधार लाते हैं, संस्कार एवं पर्व जब उत्सव बन जाते हैं, तो समाज व राष्ट्र के अंगार के साधन बन जाते हैं। मानवीय मानव पंचायतन में ग्रन्थियों के द्वारा विस्तार व परिष्कार को प्राप्त होता है, जिन्हें हम क्रमशः **१–पतितत्व से अस्तित्व, २–अज्ञान से ज्ञान, ३–अन्याय से न्याय, ४–अभाव से भाव (प्रतिष्ठा) ५–अलगाव से लगाव की यात्रा कह सकते हैं।**

पर्वो के आविष्कार– उपरोक्त वर्णित नैसर्गिक उत्प्रेरणा ही पर्वो के आविष्कार की आधारशिला है । सृष्टि की उत्पत्ति से ही प्रकृति पादप, पशु, पक्षी मनुष्य अस्तित्व में आते हैं। नवजात शिशु अपने रूदन से ही अपने अस्तित्व का घोष करने में लगता है; आँखें खुलते ही वह अज्ञान से ज्ञान के प्रति सजग होता है; किसी भी उपेक्षा के अन्याय को अपेक्षा के नगर को बदलने में वह व्यग्र रहता है। दुग्धादि का अभाव क्षुधा

का रूप धारण करता है, इसकी पूर्ति में ही वह अपनी प्रतिष्ठा मानता है, और मातापिता व अन्य पालनकर्ता का अलगाव–पृथक्करण उसे बेचैन कर देता है और इनका लगाव या गले से लगा लिये जाने पर ही उसे चैन मिलता है। ऊपर जिन पाँच उत्प्रेरणाओं का वर्णन किया गया है, वे न केवल नवजात शिशु के जीवन की वांछनीयता है प्रत्युत किशोर, युवा, प्रौढ़ व वृद्ध हर स्त्री–पुरुष की अपरिहार्य आवश्यकता है। इसीलिये मानवीय जीवन को प्रखर प्रफुल्लित परिमार्जित बनाये रखने के लिये भारतीय मनीषियों ने उसके लिये पाँच प्रमुख पर्वो के आविष्कार किये हैं, अर्थात् चिन्तन मनन के साथ उनके विधि–विधान का निर्माण किया है। इन पर्वों को प्रस्तुत तालिका के द्वारा प्रदर्शित करते हैं।

पर्व–आविष्कार के मूलाधार– देवार्चन, ऋतु परिवर्तन, महापुरुष स्मरण, स्नेह–संगठन एवं मंगल आनंद वर्धन पर्वो के मूलाधार है। पृथ्वी बारह महीनों में सूर्य का एक चक्र पूर्ण करती है। जिसे मानव का एक वर्ष कहते हैं। प्रतिवर्ष इन पर्वो की आवृत्ति–पुनरावृत्ति क्रमशः होती रहती हैं, जिनका मूलाधार अनुसन्धानरत ऋषियों ने युक्ति युक्त ढंग से प्रतिपादित किया ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रन्थ के अनुसार "चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि । शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति ।।" अर्थात् चैत्र मास शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की। आगे चलकर इस पूर्व परम्परानुसार भारतवासियों के अधिकांश संवत्–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही आरम्भ किये गये, और राज्याभिषेक आदि के महत्वपूर्ण समारोहों के लिये इसी तिथि को मान्यता दी गयी नव सम्वतसर या नववर्ष के दिन प्रथम सूर्योदय एवं सृष्टि सृजन का उत्सव पुरातन काल से मनाया जाता रहा है श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को श्रावणी पर्व मनाया जाता है, जो श्रुति अर्थात् वेद के श्रवण–श्रावण (सुनने–सुनाने) से सम्बन्धित होने के कारण अज्ञान के हनन एवं ज्ञान के ग्रहण की ओर प्रेरित करता है। **भारत वर्ष** वर्षा बाहुल्य एवं कृषि प्रधान देश है। यहाँ की कृषक प्रजा आषाढ़ एवं श्रावण में कृषि–कार्य–कलाप में व्यस्त रहती है। श्रावणी शस्य की जुताई, बुवाई आषाढ़ से प्रारम्भ होकर श्रावण के अन्त तक समाप्त हो जाती है। प्रजा के सभी वर्ग वर्षा ऋतु में विश्राम के क्षणों में वेद–गीता–उपनिषद तथा अन्यान्य उपदेशों का श्रवण सन्त महात्माओं को आमंत्रित करके, करते हैंव्यावहारिक जीवन के परिष्कार और आध्यात्मिक जीवन के उद्धार के लिए यह ज्ञान बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। वर्षा के थमते ही राष्ट्र के सभी वर्ग अपने कर्मक्षेत्र के लिए प्रयाण करने की दृष्टि से आश्विन शुक्ल दशमी पर विजय दशहरा पर्व मनाते हैं। स्वाध्याय–सत्संग कथाओं से उन्होंने अपनी पाँच ज्ञानेन्द्रियों एवं पाँच कमेन्द्रियों,अर्थात् इन दसों के दोषों का हरण एवं दसों दिशाओं में विजय के वरण का लक्ष्य तय कर लिया हैअब उन्हें सांसारिक उपलब्धियों एवं अन्याय पर न्याय की यात्रायें आरंभ करनी है। राष्ट्र रक्षक सेनानायकों को अपने अस्त्र–शस्त्र स्वच्छ सक्रिय व हैं। यही उनका पूजन है। यह आवश्यक इसलिये हैं; जैसा कि पलिस महानिदेशक ने अपने पलिस बल का निरीक्षण किया तो पाया उनके अस्त्र–शस्त्र जंग लगे, भण्डार में पड़े हैं, और प्रयोगकर्ता आरक्षियों को निशाना लगाना भी नहीं आता है। यह पर्व आयुध और योद्धाओं की दक्षता की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए है।

यह विजय दशहरा पर्व वाणिज्य–व्यवसायियों की साफल्य समीक्षा की ओर दिशा–निर्देश करता है जो वे अपने लेखा पुस्तिकाओं का प्रतीक रूप में पूजन या अनुरक्षण की औपचारिकता निभाते हैं। राष्ट्रदृरक्षा, कृषि–वाणिज–प्रविधि के विकास से राष्ट्र धन–लक्ष्मी से समृद्ध होता है। श्रावणी (खरीफ) की फसल पक कर घर भण्डार भर जाने वाले ने वाले होते हैं। अपने इस हर्ष उत्साह को नागरिक दीपावली के रूप में "तमसो मा ज्योतिर्मय" का भव्य भावना के साथ हर भवन द्वार को प्रज्ज्वलित दीपकों की माला से जगमगा देते हैं। यह दीप मालिका प्रकृति पर मानवीय कृति की विजयलक्ष्मी का प्रतिनिधित्व करती है सम्पूर्ण वर्ष की कार्तिक कृष्ण

अमावस्या सर्वाधिक गहन अन्धकार वाली होती है। अंधकार को इस दीप मालिका के द्वारा मानव हराकर ज्योति का राज्य स्थापित कर देता है, नया फसल के नवधान की प्रफुल्लित खीलों का यज्ञ–देवार्चन में समर्पित करके वह परमेश प्रभु के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है। इसीलिये इस पर्व को **शारदीय नव सस्येष्टि** भी कहते हैंएक आशंका जो निर्धनता में जितनी रहती हैं, बहु धनवान होने पर बलवती हो जाती है, वह है ईर्ष्या–द्वेषवैमनस्य की आशंका। रबी फसलों की बुवाई होकर जब फसलें अधपकी हो जाती हैं, तभी फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को होली का पर्व मनाया जाता है ।अधपके अन्न को भूनने पर उसकी संज्ञा होला या होलक हो जाती है। गली मोहल्लों में सामूहिक यज्ञाग्नि में जौ की बालियाँ भून कर आहूतियाँ दी जाती हैं। यही जौ के दाने परस्पर भेंट करके गले मिलते हैं जिससे प्रेम बढ़े और यदि किसी वैमनस्य से अलगाव हो गया हो तो वह फिर से लगाव में ढल जाये ।परिवार–समाज–राष्ट्र विघटन से बचकर संगठन में आबद्ध हो जाये भाँति भाँति के मिष्ठानदृपकवान बनाकर और एक दूसरे के परिवारों में मेल–मिलाप के साथ मिल भेंट कर खाने से प्रेम बढ़ता है।अस्तु इस पर्व मूल शास्त्रीय संज्ञा वासन्ती नव शस्येष्टि सटीक है कवि की यह पंक्तियां ऐसा ही इंगित करती हैं।

होली है तो आज अपरिचित से परिचय कर लो।
होली है तो आज परिचित से मैत्री कर लो ।
बिसरा कर विष भरे वर्ष के वैर विरोधों को,
होली है तो आज शत्रु को बाहों में भर लो।

पर्वो के सम् सामयिक नवाचार– विज्ञान तभी गतिमान रहता है, जब वह अपने दोनों पंखों से उड़ान भरता है। किसी भी पक्षी का एक पंख क्रियाशील व दूसरा पंख निष्क्रिय रहता है तो वह उड़ नहीं सकता है। विज्ञान का एक पक्ष है– **"आवश्यकता आविष्कार की जननी है"** तो दूसरा पक्ष है **"उपयोगिता नवाचार की भगिनी है।"** जैसा कि पूर्व में कह आये हैं राजस्थान में निःशुल्क वितरित किये जाने वाले धूम्र रहित चूल्हों का शोधपूर्वक निर्माण तो हुआ, प्रयोगशाला में सभी कुछ ठीक ठाक रहा; किन्तु वे व्यवहार में नहीं लाये जा सके। व्यवहार में वे तभी आये जब एक गृहणी ने उसके पतले पाइप को तोड़ कर चौड़ा किया, और उसमें अधिक ईंधन के प्रवेश का प्रावधान कर लिया। विद्वानों ने इस क्रिया को परिभाषित करने के लिए हिन्दी में कई नाम दियेनवीनीकर नवप्रवर्तन, नवोन्मेष के बाद अब इसके लिए नवाचार ने ही स्थायित्व प्राप्त किया है; जो (प्छटम्छजप्व्छ) तथा (प्छछव्ट ।ज्प्व्छ) की भांति ही आविष्कार एवं नवाचार भार–व्यवहार समतुल्य प्रतीत होता है। यह सुस्थिर सुख्यात सिद्धांत है कि जीवन का ऐसा कोई अंग–उपांग नहीं है जिसमें आविष्कार व नवाचार की क्रिया न हो। सष्टि के आदि से इनका सिलसिला निरन्तर चला आ रहा है। भारतीय पर्यो में इनकी प्रभावशीलता स्पष्ट परिलक्षित है, जिसे विस्तारभय से सारिणी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

नवाचार के निर्वचन– एक एक वर्ष और उसके संकुल पर पृथक पृथक विचार करने से बहुत विस्तार हो जायेगा। इसलिए सामहिक रूप से बिन्दु वार कुछ तथ्य यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं–

१. सृजन के लिए संयम चाहिये, ज्ञान के स्वाध्याय से टीका का निर्माण होता है, साहस से ही न्याय की स्थापना होती है सात्विक रहा। पुरुषार्थ से उपार्जित श्री लक्ष्मी की समृद्धि स्वाभिमान प्रदान करती है और पक्षपात रहित सर्वोदय–समभाव ही संगठन का आधार है। उपरोक्त पाँचों पर्वो का पंचामृत व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र की जीवन शक्ति हैं। जिसके बल पर वैदिक काल से आर्यावर्त भारतदेश विश्व का सिरमौर बना रहा।

२. पश्चिम का **नववर्ष प्रथम जनवरी** को मनाया जाता है, जो प्रकृति ऋतु वातावरण में किसी नवोदय

की सूचना नहीं देता है, प्रत्युत असीमित भोग–वासना–मादकता की ओर धकेलता है। नवसम्वतसर पर मनाये जाने वाले नववर्ष से प्रकृति ऋतु वातावरण वसन्त के नवोल्लास से भर जाते हैं। पादप–वनस्पति पुराने पत्तों को त्याग कर नई कोपलें धारण करते हैं पशु पक्षी सभी हर्षित होते हैं मानव समुदाय भी इस नये वर्ष का सात्विक भावनाओं से सोत्साह स्वागत करता है।

३. जैसा कि सारिणी में संकेत किया गया है। भारतीय नववर्ष पर ही राजाओं के राज्याभिषेक व अन्यान्य शुभ कृत्यों का समारम्भ किया जाता रहा हैकृषि प्रधान भारत देश में चैत्र और आश्विन महीनों का विशेष महत्व है चैत्र में रबी की तथा आश्विन में खरीफ की फसल पक कर घर आती है क्रमशः गर्मी एवं सर्दी के परिवर्तन भी प्रारंभ होते हैं। इसीलिए संयमपूर्वक नौ दिन के व्रत उपवास रखे जाते हैं। मातृशक्ति की इसी संयम साधना स्वरूप श्री राम–कृष्ण जैसे महापुरुष भारतभूमि पर अवतरित होते रहे हैं।

४. श्रावणी पर्व से पूर्व हरियाली तीज बाद में कृष्ण जन्माष्टमी अपना यही सन्देश देते हैं कि वृक्षारोपण व वनस्पति की वृद्धि से पर्यावरण के प्रदूषण को दूर करते रहें, और "परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्" ध्येय की पूर्ति हेतु संस्कारवान सन्तान का निर्माण करें। विद्वान ब्राह्मण अपने सद् ज्ञान से यजमान की रक्षा करते हैं, प्रतीक रूप में उनकी कलाई में रक्षा सूत्र बांधते रहे हैं। साथ ही यजमान दक्षिणा–दान से ब्राह्मणों की रक्षा करते आये हैं। परस्पर रक्षा व शुभाशीष की भावना से यही क्रम व शभाशीष की भावना से यही क्रम बहिनों ने भाई की कलाई पर राखी बाँध कर आगे बढ़ाया। इतिहास साक्षी है कि भयंकर आपत्काल में, स्नेह–सौहार्द का वातावरण बनाने में राखी का उल्लेखनीय उपयोग हुआ है।

५ विजयादशमी पर रामलीला करके रावण का वध व उसके कागजी स्वरूप के दहन के अभिनय दिखाये जाते हैं। **वास्तव में विजयदशमी पर राम ने ऐसा कुछ नहीं किया था।** इसे तो पूर्व से ही शौर्य पर्व के रूप में मनाया जाता रहा है। इसी के अनुरूप राम ने इस दिन लंका पर चढ़ाई करने का उद्योग आरंभ किया था। **वाल्मीकि एवं संत तुलसीदास द्वारा रचित रामायण में रावण का वध चैत्र मास में ही दर्शाया गया है।** रावण वध के बाद ही श्री राम अयोध्या लौट आये थे।

६. अयोध्या में राम के स्वागत में दीपक जलाये जाने की बात सही हो सकती है, पर ये दीपक तभी जलाये गये होंगे जब श्रीराम चैत्र मास में रावण का वध करके अयोध्या लौटे होंगे। कार्तिक कृष्ण अमावस्या की अंधेरी रात्रि में सात्विक ऐश्वर्य–सम्पदा व सुख समृद्धि के अभिनन्दन में घोर तमिस्र को ज्योर्तिमय कर देने के मानवीय आभा–अभियान का प्रदर्शन मात्र है। दीपावली के ये पाँचों पर्व मानवीय स्वास्थ्य, नियम–संयम, प्रभा–प्रदर्शन, गौधन–सम्वर्द्धन एवं बहिन–भाई के मान–मर्यादा के पुञ्ज हैं।

७. वर्ष में प्रकाश ऊर्जा की वृद्धि की दृष्टि से सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण होने का विशेष महत्व है, जो मकर संक्रांति पर्व पर पूजन–अर्चन एवं व्यंजन वितरण करके प्रकट किया जाता हैइसके बाद वसन्त ऋतु के स्वागत की भूमिका बन जाती है और स्थान–स्थान पर होली की स्थापना की जाती है।

८. प्रज्वलित होली में जौ की आहतिया देते समय लोग बोलते चले आ रहे हैं "होलिका माता की जय" इसे लोग हिरण्यकश्यप की बहिन एवं प्रहलाद की बुआ के नाम से जोड़ देते हैं। बहिन होलीका ने भाई हिरण्यकश्यप की सहायता के लिए बालक प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर आग में जलाने का प्रयत्न किया था। ऐसी हत्यारी होलिका की यह जय नहीं हैंवास्तव में यह जय उस भूने अधपके जौ या अन्न की है जिसे होली के नाम से हमने यज्ञ रूप में स्थापित किया देते हए जौ अर्पित करते समय सम्बोधनात्मक होलिका माता' का रूप धारण कर लेती है। हम कृतज्ञतापूर्वक उसकी जय बोलते हैं । पर्वो पर महापुरुषों के होने वाले जन्म या निर्वाण भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं। **पर्वों के यह नवाचार हमारे जीवन में स्फूर्ति के संचार का सुदर्शन चक्र चलाते रहते हैं।**

शोक समाचार

आर्य समाज के प्रहरी आचार्य नन्दकिशोर जी का स्वर्गवास

बड़ा ही दुःखद वृत्तान्त है कि आर्य जगत् के प्रहरी, हनुमान् व नारद के नाम से विख्यात प्रमाण पत्रानुसार 25 मई 1955 ई में जन्मे श्री आचार्य ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी का देहावसान हो गयाउन्होने गौरव ग्रन्थमाला व अन्य अनेकों पुस्तकों का लेखन प्रकाशन व सम्पादन किया एवं आर्य समाज के इतिहास लेखन के लिए सामग्री एकत्रित करने में अहम भूमिका निभाई। अनेकों संस्थाओं, ब्रह्मचारी, विद्वानों व जरूरत मंदों को सहयोग प्रदान किया। देश व विदेश में वैदिक धर्म के प्रचार में जो सदा संलग्न रहे। उनकी दोनों किडनी रोग से ग्रसित थी। 9 जनवरी 2020 से दानापुर, पटना, इन्दौर, होशंगाबाद के चिकित्सालयों में चिकित्सा करवाई गयी। अनेकों आर्यजनों के सहयोग से आचार्य सत्यसिन्ध आर्य (प्राचार्य, आर्ष गरुकल महाविद्यालय होशंगाबाद) द्वारा उनकी चिकित्सा व सेवा का पूरा ध्यान रखा गया। परन्तु इतना होने के बावजूद भी चिकित्सा के दौरान 17 फरवरी 2020 को सायंकाल 7:30 बजे होशंगाबाद में उनका निधन हो गया। आचार्य श्री के पार्थिव शरीर की अन्त्येष्टि दिनांक 19 फरवरी 2020 को प्रातः 10:30 से आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद के उद्यान में संस्कार विधि के अनुसार स्वामी ऋतस्पति जी के निर्देशन में, आचार्य अखलेश शर्मा (गुरुकुल स्नातक), आचार्यों व ब्रह्मचारियों द्वारा वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ की गई। आचार्य सत्यसिन्धु आर्य ने उनके अन्तिम संस्कार में स्थानीय क्षेत्रिय व भारत विशेषतः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी (महू), वैद्य हंसराज जी (हरिद्वार), स्वामी संपूर्णानन्द जी (करनाल), डॉ. वेदपाल आर्य जी (प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर) महात्मा वेदपाल जी आर्य (पानीपत), आचार्य राजेन्द्र जी (आचार्य गरुकल कालवा जीन्द), श्री गणेशदास जी गोयल (श्रद्धनन्द नया बाजार, दिल्ली)। आचार्य अंश देव जी. श्री कमल नारायण जी (छत्तीसगढ़), श्री भूषण जी (बिहार) आदि उपस्थित हुए। सभी ने आचार्य ब्रह्मचारी जी के गुणों, कार्यों एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला व मौन श्रद्धांजलि दी 22 फरवरी को प्रातः 9:30 से उनके अस्थिचयन के उपरान्त 10:30 से आचार्य धीरेन्द्र जी (जबलपुर) के पौरोहित्य में एवं आचार्य सत्यसिन्धु आर्य के यजमानत्व में शांतियज्ञ आयोजित किया गया।

यज्ञ के उपरान्त आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक के संयोजकत्व में श्रद्धांजलि सभा प्रारम्भ हुई श्रद्धांजलि सभा में दर्शन योग महाविद्यालय रोजड से आए श्री स्वामी आशुतोष परिव्राजक जी, श्री जयनारायण आर्य जी (छतरपुर महाराजपुर), श्री राजेन्द्र शर्मा जी (इटारसी), श्री बालचंद गामी जी (इन्दौर) श्री गिरीशचन्द्र जी उपाध्याय (होशंगाबाद) माता सरोज आर्या जी एवं श्री अनुव्रत आर्य जी (हरिद्वार) स्वामी ऋतस्पति जी (गरुकल होशंगाबाद) ने नम आँखों से समस्त आर्यसमाजों व अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। तदुपरांत आचार्य ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी की इच्छा के अनुरुप आचार्य सत्यसिन्धु जी को उपस्थित आर्यजनों ने आचार्य ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी का उत्तराधिकारी नियुक्त किया। अन्त में आचार्य सत्यसिन्धु जी ने उपस्थित सभी जनों का आभार व्यक्त किया और सभी ने मौन होकर प्रभु से प्रार्थना की कि प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके जाने से गुरुकुल परिवार व आर्यजगत को जो अपार दुःख हुआ है उसे सहने की शक्ति प्रदान करे। श्रद्धांजलि सभा में **आगन्तुक गणमान्य जनों व आर्ष गुरुकुल परिवार होशंगाबाद** ने पूज्य आचार्य बहाचारी नन्दकिशोर जी की स्मति में उनके द्वारा श्री भीमसिंह जी आदि के समक्ष व्यक्त की गई विशेष इच्छा के अनुसार भव्य पुस्तकालय निर्माण करने का निर्णय लिया और सभी आर्यजनों से पुस्तकालय के निर्माण में सहयोग करने की अपील की गई। अन्त में शान्तिपाठ पूर्वक श्रद्धांजलि सभा पूर्ण हुई।

सगोत्र विवाह का निषेध क्यों ?

–पं. जगदेवसिंह सिद्धांती

मनुष्य (चाहे पुरुष हो, चाहे स्त्री) में माता–पिता के रजःवीर्य के सम्बन्ध के कारण सन्तान रूप में शारीरिक रक्त आदि अंश अवश्य परम्परया पहुँचते हैं। यह आयुर्वेद का विशुद्ध वैज्ञानिक सिद्धान्त है। इस कारण समान रजः+वीर्य के मिलने में सन्तान में कुछ विशेषता उत्पन्न नहीं होती और भाई–बहिन आदि अनेक सम्बन्ध नष्ट हो जाने से सदाचार का नाश और व्यभिचार की वृद्धि होती है, अतः समान गोत्र में विवाह कभी नहीं होना चाहिये। माता आदि का गोत्र भी छोड़ा जावे तो और भी अच्छा है, परन्तु माता की सपिण्डता छः पीढ़ियां तो अवश्य छोड़ देनी वैधानिक हैं।

पिता– पितामह–प्रपितामह आदि क्रम से हजारों पीढ़ियों तक पीछे जाना गोत्र कहलाता है। 6 पीढ़ी तक के बालक सपिण्ड कहलाते हैं–अर्थात् 6 पीड़ी ऊपर तक जितने पितृ गोत्र और मातृ गोत्र में पुरुष होंगे कहलाते हैं। सातवीं पीढी पर पहुँच कर मातवंश की सपिण्डता समाप्त हो जाती है, क्योंकि वैज्ञानिक आधार पर माता के रक्त (रजः) का अंश बालक में 6 पीढ़ी तक अवश्य पहुँचता है; अतः इस मर्यादा का विवाह में कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिये, कि माता के वंश की पीढ़ियों के भीतर के परिवार की कन्या से विवाह सम्बन्ध नहीं होना चाहिये। पिता के वीर्य का साक्षात् सम्बन्ध अवश्य 14 पीढ़ी तक चलता है। उसको "समानोदक" कहते हैं। उदक नाम वीर्य का है।

अतः पिता के वंश की 14 पीढ़ियाँ समानोदक कहलाती हैं। इन पीढ़ियों के भीतर के पुरुष सम्बन्धी, बन्धु–बान्धव सनाभि, सकुल्य आदि नामों से पुकारे जाते हैं। इन सब का व्यापक शब्द परिवार और कटम्ब कहा जाता है। अनेक परिवारों के समह को वंश कहते हैं। अर्थात एक ही वंश में अनेक एक गोत्रीय परिवार रहते हैं। इसी प्रकार अनेक वंशों के समूह को गोत्र कहा जाता है ।

अर्थात् एक गोत्र में अनेक वंश होते हैं, जिनका गोत्र समान होता है। जब तक गोत्र का नाम बना रहता है तब तक उन सब वंश वालों का एक ही गोत्र कहलाता है। तब उन अपने गोत्र में उत्पन्न हुई किसी भी कन्या से उसी गोत्रीय कुमार का विवाह नहीं होना चाहिये । क्योंकि रक्त संबंध का अंश– स्मरण बना हुआ रहता है। इसी कारण वैदिक विवाह मर्यादा में सगोत्रता का युक्ति युक्त निषेध पाया जाता है। ऐसे ही अनेक गोत्रों के समूह एक संघ को "कुल' कहा जाता है।

एक कुल में अवस्था के कारण भिन्न–भिन्न गोत्रों का समावेश हो जाता है। विवाह सम्बन्ध में समान कुलोत्पन्न वर–वधू का विवाह हो सकता है, क्योंकि वहां रक्त सम्बन्ध का नाम मात्र भी नहीं होता, परन्तु गोत्र में विवाह सम्बन्ध त्याज्य है। इसी पवित्र नियम का पालन करती हुई आर्य जाति आज भी शुद्ध रूप में बनी हुई है। यह गोत्र विचार पाखंड और ढ़ोंग नहीं किन्तु पूर्ण वैज्ञानिक और वैदिक है। इस नियम का पालन करने से सन्तान श्रेष्ठ, सदाचारी, कुलीन, विद्या विभूषित, बलवान, दृढ़ांग और नीरोग बने रहते हैं।

विवाह संस्कार के नियमों का पालन अवश्य करना चाहिये इस प्रकार के विवाह सम्बन्ध द्वारा ही गृहस्थाश्रम का पालन मर्यादा पूर्वक किया जा सकता है।

इसी से मनुष्यों की आयु 100 वर्ष की सामान्य रूप से बनी रहती है। जिन देशों और जातियों में इस नियम का पालन नहीं होता वे शीघ्र पतनावस्था में पहुंच जाते हैं।

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

वर्ष 72 अंक 255
कुल पेज 14+4=18
नगर संस्करण
कीमत ₹ 3.50
फाल्गुन कृष्ण नवमी सं. 2076
इंदौर, सोमवार 17 फरवरी 2020
www.naidunia.com

नईदुनिया

नई सोच, नया अंदाज

इंदौर, भोपाल (नवदुनिया), जबलपुर, ग्वालियर, रायपुर और बिलासपुर से एक साथ प्रकाशित

तार्किक बहस के बजाय बेतुकी कोशिश 6

हुनर हाट : देसी अंदाज में देसी व्यंजन का लुत्फ 9

गो पालन बिना उन्नत नहीं होगा राष्ट्र

महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्मोत्सव कार्यक्रम में आचार्य संजीव रूप ने कहा

इंदौर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। महर्षि दयानंद सरस्वती केवल ईश्वर भक्त या योगी ही नहीं थे, वे स्वतंत्रता के पहले उद्घोषक, समाज सुधारक, दलित उद्धारक, राष्ट्रभक्त, लेखक और वेदों का ज्ञान रखने वाले भी थे। उन्होंने कहा था यज्ञ और गो पालन के बगैर राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। यह बात संचार नगर में आयोजित महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव कार्यक्रम में वेद कथाकार आचार्य संजीव रूप ने कही। तीन दिवसीय यह आयोजन केंद्रीय आर्य युवक परिषद और आर्य समाज की तरफ से किया जा रहा है।

केंद्रीय आर्य युवक परिषद मध्य प्रदेश के अध्यक्ष आचार्य भानु प्रताप वेदालंकार ने कहा कि वेद ही ऐसा एक मात्र ग्रंथ है, जो कहता है कि हमें मनुर्भव अर्थात मनुष्य बनाना चाहिए। वेद के अनुसार चलने और वेदों की रक्षा करनी होगी। अयोध्या से आए स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने कहा कि नारी उत्पीड़न दूर करने और उन्हें अधिकार दिलाते हुए पुनर्विवाह प्रथा प्रारंभ की। बाल विवाह को रोकने के कदम उठाए, कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था लागू की। गुरुकुल का संचालन शुरू किया गया। शास्त्रार्थ परंपरा से कुरीतियों का निवारण किया। तीन दिवसीय आयोजन में रोजाना राष्ट्र रक्षा यज्ञ किया जाएगा।

25 साल से सिर्फ गाय का दूध पी रहे आचार्य सर्वानंद

संचार नगर में जन्मोत्सव कार्यक्रम के दौरान योगासन करते आचार्य सर्वानंद सरस्वती। ● **सौजन्य : आयोजक**

जन्मोत्सव में आचार्य सर्वानंद सरस्वती भी पहुंचे हैं। उन्होंने पिछले 50 साल से अन्न का त्याग कर रखा है। वे सिर्फ सब्जियों और गाय के दूध का सेवन करते थे। 25 साल पहले उन्होंने सब्जियां खाना भी छोड़ दिया। अब सिर्फ गाय का दूध पीते हैं। वे योगासन व आचार्य दयानंद सरस्वती के संदेश लोगों तक पहुंचा रहे हैं। आचार्य सर्वानंद के अनुसार वे 114 साल के हैं। अयोध्या में उनका जन्म हुआ था। 1933 में आर्मी में शामिल हुए। छह साल आर्मी में रहे, फिर संन्यास ले लिया। उन्होंने बताया कि 1950 में नमक छोड़ दिया था। फिर धीरे-धीरे अनाज भी खाना बंद कर दिया। अब सिर्फ गाय का दूध ही रोजाना पीते हैं। इस उम्र में भी रोज एक घंटा प्राणायाम, योगासन, दौड़ लगाते हैं व शीर्षासन भी कर लेते हैं।

आप पढ़ रहे हैं देश का एकमात्र नो निगेटिव अखबार

दैनिक भास्कर

आज नो निगेटिव अखबार

AMRITA LUDHWANI
PLACED WITH
APPAREL GROUP DUBAI
BE WHERE
YOU BELONG

JAIPURIA
INSTITUTE OF MANAGEMENT
LUCKNOW · NOIDA · JAIPUR · INDORE
www.jaipuria.ac.in
PGDM PROGRAMS 2020-22
AICTE APPROVED, TWO YEAR FULL TIME
UPTO 50% SCHOLARSHIPS ON CAT SCORES
AIU NBA
AACSB
CamScanner

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

300 योगासन के जानकार 114 वर्षीय स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने दी सेहत की सीख

सुबह 4 बजे उठें, खुली हवा में जाएं और 100 लंबी-लंबी सांसें लें तो रहेंगे स्वस्थ

महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्मोत्सव शुरू

भास्कर संवाददाता | इंदौर

केंद्रीय आर्य युवक परिषद मप्र एवं आर्य समाज संचार नगर द्वारा राष्ट्र रक्षा महायज्ञ के साथ महर्षि दयानंद सरस्वती का तीन दिनी 196वां जन्मोत्सव रविवार से शुरू हुआ। इसमें अयोध्या से आए 114 वर्षीय स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने लोगों को सेहतमंद रहने के कई तरीके बताए। उन्होंने कहा कि सुबह 4 बजे उठकर खुली हवा में जाएं और 100 बार लंबी-लंबी सांसें लें। इसके बाद एक से दो गिलास पानी तांबे के लौटे में पीना चाहिए। इससे आप स्वस्थ रहेंगे।

जीवनशैली में ये तरीके भी अपनाएं, सेहतमंद रहेंगे

- बीपी से बचने के लिए एक माह में करीब 10 दिन तक लहसुन की पांच कली छीलकर पानी से लेना चाहिए। साथ ही पांच किमी चलना चाहिए।
- सूर्योदय से करीब दो घंटे बाद अंकुरित अन्न, फल और जूस लें। छह प्रकार के अन्न की एक रोटी, दलिया खाएं।
- बाजार की मिठाई न खाएं। घर की बनी मिठाई का उपयोग कर सकते हैं। दही में शहद और गाय के घी का सेवन करें। इससे वात, पित्त और कफ की समस्या दूर होगी।
- दिन में भोजन में एक बार में एक ही डिश का सेवन करना चाहिए। दिन में अपनी खुराक से एक रोटी का सेवन कम करें।
- रात का भोजन सूर्यास्त के करीब एक घंटे बाद तक कर लेना चाहिए। इसमें दाल, रोटी, सब्जी ले सकते हैं।
- 45 से 50 वर्ष से ज्यादा की आयु वालों को रात में दाल का सेवन नहीं करना चाहिए।
- क्रोध आयु को कम करता है। भय से दिल कमजोर होता है, जिसमें उम्र कम होती है, इसलिए प्रसन्न रहें।

इस उम्र में भी रोजाना सुबह एक घंटे करते हैं योग

संबोधित करते स्वामी सर्वानंद सरस्वती।

स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने भास्कर को बताया वे मूल रूप से अयोध्या के रहने वाले हैं। सन् 1933-34 में मिलिट्री में स्टोर कीपर के रूप में काम करते थे। बाद में आर्य समाज से जुड़े। उन्हें 300 प्रकार के योग आसान आते हैं। 1948 से योग आसन कर रहे हैं। सुबह 3 बजे उठते हैं। 4 बजे नहाते हैं। 4 से 5 बजे तक योग करते हैं। 5 से 7 बजे गायत्री और ओम मंत्र जाप और ध्यान करते हैं। 7 बजे दूध लेते हैं। शाम 5 बजे फिर से नहाते। दो घंटे ध्यान के बाद 7 बजे दूध लेते हैं। यदि किसी सत्संग में नहीं होते तो 8 बजे सो जाते हैं। अन्न, नमक, मीठे का त्याग कई वर्षों से कर रखा है। सिर्फ देशी गाय का दूध और पिंडखजूर का सेवन करते हैं।

हिंदू-मुस्लिम, सिख-ईसाई से पहले मनुष्य बनें : आचार्य संजीव

कार्यक्रम में उप्र बदायूं से आए अंतरराष्ट्रीय वेद कथाकार आचार्य संजीव रूप के ब्रह्मत्व में राष्ट्ररक्षा महायज्ञ शुरू हुआ। इस मौके पर आचार्य ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती केवल ईश्वर भक्त या योगी ही नहीं थे। वे स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक, महान समाज सुधारक, सच्चे भक्त थे। कार्यक्रम संयोजक व केंद्रीय आर्य युवक परिषद मप्र अध्यक्ष डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार ने बताया वेद ही ऐसा एकमात्र ग्रंथ है, जो कहता है कि हमें मनुर्भव अर्थात मनुष्य बनना चाहिए। न हिंदू, न मुस्लिम और न सिख बनें। हम सच्चे मानव बनें। यह आयोजन 18 फरवरी तक रोजाना सुबह 9 से 11 और शाम 5 से 8 बजे तक चलेगा। इस यज्ञ के मुख्य यजमान प्रवेश देवड़ा थे।

samachar.indore@gmail.com, indoresmchr@rediffmail.com, info@indoresamachar.net, Web: www.indoresamachar.net

वर्ष 77

आर.एन.आई. न. 1533/57 डॉक पंजीयन क्रमांक MP/IDC/91/2018-20

इन्दौर समाचार

एक नई सोच और नई दिशा की ओर तेजी से बढ़ता अखबार....

MONDAY

अंक-319

पृष्ठ- 16 मूल्य 3 रु.

इन्दौर, सोमवार 17 फरवरी 2020

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

यज्ञ व गौ पालन के बिना राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता : आचार्य संजीव

इंदौर।

महर्षि दयानंद सरस्वती केवल ईश्वर भक्त या योगी ही नहीं थे, वे स्वतन्त्रता के प्रथम उदघोषक, महान समाज सुधारक, दलित उद्धारक, सच्चे राष्ट्रभक्त, महान लेखक, प्रखरवक्ता तथा वेदोद्धारक थे। यज्ञ व गौ पालन के बिना राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद म.प्र. तथा आर्य समाज संचार नगर के तत्वावधान में राष्ट्र रक्षा महायज्ञ तथा महर्षि दयानंद सरस्वती का तीन दिवसीय 196वें जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में बंदायू के कथाकार आचार्य संजीव रूप ने कहे। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने नारी, शिक्षा व स्वतन्त्रता पर विशेष बल देते हुए पुनर्विवाह [illegible] की थी। [illegible] संस्कृति [illegible] रखने के लिए गुरुकुल संचालित किये। यज्ञ और गौमाता को उन्होंने घर-घर में स्थापित किया। कार्यक्रम संयोजक एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद म.प्र. के अध्यक्ष डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार ने बताया कि वेद ही ऐसा एकमात्र ग्रंथ है जो कहता है कि हमें मनुर्भव अर्थात मनुष्य बनाना चाहिए। न हिन्दू न मुस्लिम, न सिक्ख, न ईसाई बनें, हम सभी मानव बनें। इसके लिए गौआदि प्राणियों की रक्षा करनी होगी। यज्ञ करना होगा, वेद की आज्ञा मानी होगी तभी हम सभी अर्थों में मनुष्य बन सकते हैं। कार्यक्रम 17 एवं 18 फरवरी को प्रतिदिन प्रातः 9 से 11 एवं सायं 5 से 8 बजे तक चलेगा, जिसमें अनेक विद्वान, संन्यासियों के प्रवचन-भजन होंगे। मुख्य यज्ञमान प्रवेश देवड़ा एवं सोनम देवड़ा थे। कार्यक्रम में दिग्विजयसिंह चौहान, सुनील शर्मा, दर्शन बोरडे, श्रीमती सुरभी भोपले, वरुण राठौर, विशाल देवड़ा, कुशलव आर्य, श्रीमती सीमा देवड़ा उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन आचार्य प्रणवीर शास्त्री, पवन शास्त्री ने किया। आभार श्रीमती गायत्री सोलंकी ने माना।

नव भारत

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

19 फरवरी : जयंती पर विशेष

प्रकांड विद्वान के साथ ही समाज सुधारक थे स्वामी दयानंद

आर्य समाज के संस्थापक तथा समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म सन् 1824 में एक ब्राह्मण परिवार में मुंबई में हुआ. मूलशंकर उनका बचपन का नाम था. धर्म सुधार हेतु अग्रणी रहे दयानंद सरस्वती ने 1875 में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की थी और पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर उद्गार है. स्वामी जी के नेतृत्व में ही 1857 के स्वतंत्रता संग्राम क्रांति की सम्पूर्ण योजना तैयार की गई थी और वही उसके प्रमुख सूत्रधार थे. भारत, भारतीयों का है यह अँग्रेजों के अत्याचारी शासन से तंग आ चुके भारत में कहने का साहस भी सिर्फ दयानंद में ही था. उन्होंने अपने प्रवचनों के माध्यम से

अग्निबाण

इंदौर 13 फरवरी 2020

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

महर्षि दयानंद जन्म उत्सव समारोह आज से

इन्दौर। आर्य समाज संचार नगर के तत्वावधान में महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्मोत्सव 16 से 18 फरवरी तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर वेदकथा और राष्ट्र रक्षा महायज्ञ भी आयोजित होगा। आयोजन में भाग लेने 114 वर्षीय स्वामी सर्वानंद महाराज पंजाब से इन्दौर आ चुके है। सभी कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात: 9 से 11 बजे तक और सायंकाल 5 से 8 बजे तक आयोजित होंगे। ऋषि भंडारा भी आयोजित होगा। स्वामी सर्वानंदजी आयोजन में योगासन का

नईदुनिया

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

गो पालन बिना उन्नत नहीं होगा राष्ट्र

महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्मोत्सव कार्यक्रम में आचार्य संजीव रूप ने कहा

इंदौर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। महर्षि दयानंद सरस्वती केवल ईश्वर भक्त या योगी ही नहीं थे, वे स्वतंत्रता के पहले उद्घोषक, समाज सुधारक, दलित उद्धारक, राष्ट्रभक्त, लेखक और वेदों का ज्ञान रखने वाले भी थे। उन्होंने कहा था यज्ञ और गो पालन के बगैर राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। यह बात संचार नगर में आयोजित महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव कार्यक्रम में वेद कथाकार आचार्य संजीव रूप ने कही। तीन दिवसीय यह आयोजन केंद्रीय आर्य युवक परिषद और आर्य समाज की तरफ से किया जा रहा है।

केंद्रीय आर्य युवक परिषद मध्य प्रदेश के अध्यक्ष आचार्य भानु प्रताप वेदालंकार ने कहा कि वेद ही ऐसा एक मात्र ग्रंथ है, जो कहता है कि हमें मनुर्भव अर्थात मनुष्य बनाना चाहिए। वेद के अनुसार चलने और वेदों की रक्षा करनी होगी। अयोध्या से आए स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने कहा कि नारी उत्पीड़न दूर करने और उन्हें अधिकार दिलाते हुए पुनर्विवाह प्रथा प्रारंभ की। बाल विवाह को रोकने के कदम उठाए, कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था लागू की। गुरुकुल का संचालन शुरू किया गया। शास्त्रार्थ परंपरा से कुरीतियों का निवारण किया। तीन दिवसीय आयोजन में रोजाना राष्ट्र रक्षा यज्ञ किया जाएगा।

25 साल से सिर्फ गाय का दूध पी रहे आचार्य सर्वानंद

संचार नगर में जन्मोत्सव कार्यक्रम के दौरान योगासन करते आचार्य सर्वानंद सरस्वती। • सौजन्य : आयोजक

जन्मोत्सव में आचार्य सर्वानंद सरस्वती भी पहुंचे हैं। उन्होंने पिछले 50 साल से अन्न का त्याग कर रखा है। वे सिर्फ सब्जियों और गाय के दूध का सेवन करते थे। 25 साल पहले उन्होंने सब्जियां खाना भी छोड़ दिया। अब सिर्फ गाय का दूध पीते हैं। वे योगासन व आचार्य दयानंद सरस्वती के संदेश लोगों तक पहुंचा रहे हैं। आचार्य सर्वानंद के अनुसार वे 114 साल के हैं। अयोध्या में उनका जन्म हुआ था। 1933 में आर्मी में शामिल हुए। छह साल आर्मी में रहे, फिर संन्यास ले लिया। उन्होंने बताया कि 1950 में नमक छोड़ दिया था। फिर धीरे-धीरे अनाज भी खाना बंद कर दिया। अब सिर्फ गाय का दूध ही रोजाना पीते हैं। इस उम्र में भी रोज एक घंटा प्राणायाम, योगासन, दौड़ लगाते हैं व शीर्षासन भी कर लेते हैं।

राज एक्सप्रेस

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

महर्षि दयानंद सरस्वती का तीन दिवसीय जन्मोत्सव आरंभ

इंदौर ■ राज न्यूज नेटवर्क

केंद्रीय आर्य युवक परिषद मप्र एवं आर्य समाज संचार नगर इंदौर के तत्वावधान में राष्ट्ररक्षा महायज्ञ के साथ महर्षि दयानंद सरस्वती का तीन दिवसीय 196वां जन्मोत्सव आरंभ हुआ। उप्र बदायू से पधारे अंतरराष्ट्रीय वेद कथाकार आचार्य संजीव 'रुप' के ब्रह्मत्व में राष्ट्ररक्षा महायज्ञ आरंभ हुआ। इस अवसर पर आचार्य संजीव रुप से कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती केवल ईश्वर भक्त या योगी ही नहीं थे वे स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक, महान समाज सुधारक, दलित उद्धारक, राष्ट्रभक्ता, महान लेखक, प्रखरवक्ता, तथा वेदोद्धारक थे। महर्षिक दयानंद ने कहा था कि यज्ञ व गौ पालन के बिना राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता। कार्यक्रम के संयोजक एवं केंद्रीय आर्य युवक परिषद मप्र के अध्यक्ष डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार ने इस अवसर पर बताया कि वेद ही ऐसा एक मात्र ग्रंथ है, जो कहता है कि हमें मनुर्भव अर्थात् मनुष्य बनाना चाहिए।

हम सच्चे मानव बनें

न हिंदू, न मुस्लिम, न सिक्ख न ईसाई बने हम सच्चे मानव बने। यह कार्यक्रम 17 एवं 18 को भी प्रतिदिन प्रातः 9 से 11, सांय 5 से 8 बजे तक चलेगा, जिसमें अनेको विद्वान सन्यासियों के प्रवचन-भजन होंगे। इस राष्ट्ररक्षा महायज्ञ के मुख्य यज्ञमान प्रवेश देवड़ा एवं सोनम देवड़ा थे। मुख्य रूप से दिग्विजयसिंह चौहान, पंडित सुनील शर्मा, दर्शन बोरडे आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन आचार्य प्रणवीर शास्त्र किया।

राज एक्सप्रेस

महर्षि दयानंद सरस्वती का तीन दिवसीय जन्मोत्सव आरंभ

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

इंदौर ■ राज न्यूज नेटवर्क

केंद्रीय आर्य युवक परिषद मप्र एवं आर्य समाज संचार नगर इंदौर के तत्वावधान में राष्ट्ररक्षा महायज्ञ के साथ महर्षि दयानंद सरस्वती का तीन दिवसीय 196वां जन्मोत्सव आरंभ हुआ। उप्र बदायू से पधारे अंतरराष्ट्रीय वेद कथाकार आचार्य संजीव 'रुप' के ब्रह्मत्व में राष्ट्ररक्षा महायज्ञ आरंभ हुआ। इस अवसर पर आचार्य संजीव रुप से कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती केवल ईश्वर भक्त या योगी ही नहीं थे वे स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक, महान समाज सुधारक, दलित उद्धारक, राष्ट्रभक्ता, महान लेखक, प्रखरवक्ता, तथा वेदोद्धारक थे। महर्षिक दयानंद ने कहा था कि यज्ञ व गौ पालन के बिना राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता। कार्यक्रम के संयोजक एवं केंद्रीय आर्य युवक परिषद मप्र के अध्यक्ष डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार ने इस अवसर पर बताया कि वेद ही ऐसा एक मात्र ग्रंथ है, जो कहता है कि हमें मनुर्भव अर्थात् मनुष्य बनाना चाहिए।

हम सच्चे मानव बनें

न हिंदू, न मुस्लिम, न सिक्ख न ईसाई बने हम सच्चे मानव बने। यह कार्यक्रम 17 एवं 18 को भी प्रतिदिन प्रातः 9 से 11, सांय 5 से 8 बजे तक चलेगा, जिसमें अनेको विद्वान सन्यासियों के प्रवचन-भजन होंगे। इस राष्ट्ररक्षा महायज्ञ के मुख्य यज्ञमान प्रवेश देवडा एवं सोनम देवड़ा थे। मुख्य रूप से दिग्विजयसिंह चौहान, पंडित सुनील शर्मा, दर्शन बोरडे आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन आचार्य प्रणवीर शास्त्र किया।

राजस्थान पत्रिका

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

महर्षि दयानंद सरस्वती जन्मोत्सव आज से

इंदौर @ पत्रिका. केंद्रीय आर्य युवक परिषद एवं आर्य समाज, संचार नगर के तत्वावधान में महर्षि दयानंद सरस्वती का 196वां जन्मोत्सव रविवार से 18 फरवरी तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर वेद कथा एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। कथाकार आचार्य संजीव रूप बदायू भी शामिल होंगे। इसमें बड़ी संख्या में आर्य समाज से जुड़े लोग शामिल होंगे।

स्वदेश

यज्ञ व गौ पालन के बिना राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता-आचार्य संजीव रूप

इंदौर ● स्वदेश समाचार

केंद्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. एवं आर्य संचार नगर के तत्वावधान में राष्ट्र रक्षा महायज्ञ के साथ महर्षि दयानंद सरस्वती का तीन दिवसीय 196वां जन्मोत्सव अंतर्राष्ट्रीय वेद कथाकार आचार्य संजीव 'रूप' के ब्रह्मत्व में राष्ट्र रक्षा महायज्ञ आरंभ हुआ।

इस अवसर पर आचार्य संजीव रूप ने कहा कि 'महर्षि दयानंद सरस्वती' केवल ईश्वर भक्त या योगी ही नहीं थे वे स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक, महान समाज सुधारक, दलित उद्धारक, सच्चे राष्ट्रभक्त, महान लेखक, प्रखर वक्ता तथा वेदोद्धारक थे। महर्षि दयानंद ने कहा था कि यज्ञ व गौपालन के बिना राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने नारी, शिक्षा व स्वतंत्रता पर विशेष बल देते हुए पुनर्विवाह प्रथा प्रारंभ की, बाल विवाह रोके, कर्म से वर्ण व्यवस्था लागू की, भारतीय प्राचीन संस्कृति को अक्षुण्ण रखने हेतु गुरुकुल संचालित किए। शास्त्रार्थ परंपरा से कुरीतियों का निवारण किया। यज्ञ और गौमाता को उन्होंने घर-घर में स्थापित किया। उपरोक्त विचार 114 वर्षीय स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने व्यक्त किए। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकर ने बताया कि उक्त कार्यक्रम 17 एवं 18 को प्रातः 9 से 11 सायं 5 से 8 बजे तक चलेगा। जिसमें अनेकों विद्वान-संन्यासियों के प्रवचन-भजन होंगे। कार्यक्रम का आचार्य प्रणवीर शास्त्री ने संचालन किया। आभार श्रीमती गायत्री सोलंकी ने माना।

RNI NO. MPHIN/2005/15582
डाक पंजी. क्र. MP/ICD/04/2012-14
निर्भीक व निष्पक्ष पत्रकारिता...

सिटी ब्लास्ट

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) में महर्षि दयानंद सरस्वती के 196वें जन्मोत्सव के इन्दौर के मुख्य समाचार पत्रों की खबर

दयानंद सरस्वती का जन्मोत्सव

इन्दौर (सिटी ब्लास्ट न.प्र.)। आर्य समाज संचार नगर द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती का तीन दिवसीय जन्मोत्सव 16 से 18 फरवरी तक संचार नगर कनाडिया रोड पर आयोजित किया जाएगा। प्रणवीर शास्त्री ने बताया कि जन्मोत्सव में वेद कथा एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का आयोजन भी किया जाएगा। प्रतिदिन सुबह 9 से 11 बजे तक और शाम 5 से 8 बजे तक धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस अवसर पर प्रभा मित्र, याज्ञवेन्द्र शास्त्री, हरिनारायण आर्य, पवन शास्त्री, भानुप्रताप वेदालंकार मौजूद रहेंगे।

परमात्मा- जीवात्मा देवात्मा- महात्मा ऋत सत्य

परमात्माः— युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वैदिक ऋचाओं के सत्यार्थ बतलाने वाले और वैचारिक क्रान्ति का संगठन आर्य समाज के संस्थापक थे। उन्होने सम्पूर्ण विश्व के लोगों को एक सूत्र में बांधने के लिये आर्य समाज के दस नियम ऐसे बनाये कि संसार में कोई भी किसी भी कथित धार्मिक मत को मानने वाला हो, वह सभी के लिये हितकारी है।

परमात्मा के बारे में दूसरा नियम देखिये। परमात्मा के ऋत गुण व सृष्टिक्रम के अनुकूल बनाया है। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

इस विशाल सृष्टि में पृथ्वी, चांद, तारे सूर्य अनवरत गति कर रहे है। हर चीज घर्म रही है। इसमें कोई शक्ति धारा बह रही है, हर परमाणु नियम से बंधा हुआ है प्रत्येक वस्तु नियम से व नियमित गतिशील है सृष्टि की गति व रचना का अर्थ है, सृष्टि का विकास व विनाश नियम हो रहा है, परिवर्तन हो रहा है। यही चेतन शक्ति प्राणी जगत में उद्बुद्ध हो रही है परन्तु प्राणी जगत की सृर्जनात्मक चेतन शंक्ति तथा जड़ एवं वृक्षादि में वर्तमान चेतन शक्ति में भेद है। प्राणी में वैयक्तिक चेतना तथा विश्व चेतना दोनों हैं । इनमें वैयक्तिक चेतना आत्मा कहलाती है और विश्व चेतना परमात्मा कहलाती है। आत्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है और कर्म फल भोगने में परतन्त्र है। परमात्मा जड़ चेतन सब में मौजूद हैं, परन्तु वह कर्म बन्धन में नही बंधता है।

परमात्मा से कोई तद्रूप कार्य और उसके कारण अर्थात् साधकतम दूसरा अपेक्षित नहीं है, न कोई उसके तुल्य और न अधिक है। सर्वोत्तम शक्ति अर्थात जिसमें अनन्त ज्ञान, अनन्त बल और अनन्त किया है वह स्वाभाविक अर्थात् सहज उसमें सुनी जाती है । जो परमेश्वर निष्क्रिय होता तो जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय न कर सकता, इसलिये वह "विभु" तथापि चेतन होने से उसमें किया भी है ।

हम आर्य समाज के दूसरे नियम में ऊपर कह चुके है कि परमात्मा सच्चिदानन्द है। सत् अर्थात् यथार्थता/चित चेतन, और महाचेतना का तीसरा विशिष्ट गुण है आनन्द परमात्मा के नेत्र सब जगह है वह सब कुछ देख रहा है, उसका मुख सब जगह है, परमाणु—परमाणु में उसके दर्शन होते है, उसकी भुजायें सब जगह है, जहां चाहे उसकी अंगुलि पकड़ सकते हो, उसके पांव सब जगह है, कौन सी जगह है जहां वह नहीं पहुंच सकता । वह परमात्मा अंगुष्ट मात्र आत्मा के भीतर सदा मनुष्यों के हृदय में सन्निविष्ट है । हृदय मन व बुद्धि से उसका आभास होता है । वह अणु से अणु है, महान से महान है, वह कर्म नहीं करता अक्रतु है, उस परमात्मा की महिमा को उसकी कृपा से ही उसका अहसास करते है और परमात्मा द्वारा रचित सृष्टि में उसकी कृती का अवलोकन करते है—

जीवात्माः— जीवात्मा तथा ब्रह्म का प्रथम वास वह स्थान है जिसे हम शरीर 3 कहते है । जाग्रतावस्था में चेतना भीतर से निकल कर जाग्रत स्थान में आ जाती है। जीव की चेतना शरीर में और ब्रह्म की चेतना विश्व स रूप से आ बैठती है। जाग्रतवस्था में जीव के लिये शरीर और ब्रह्म के लिये प्रकृति ही उसका स्थान हैमानों ब्रह्म जीव की तरह अन्दर से आ बैठता है उस अवस्था में जीव अपना कार्य क्षेत्र शरीर में बना लेता है, और ब्रह्मं इस विशाल प्रकृति को/वहां हम शरीर में जट जीवात्मा को पा लेगें और प्रकृति में ब्रह्म को / शरीर जाग्रतवस्था

में तभी आती है जब जीवात्मा जाग्रत स्थान पर आ बैठता है तब शरीर की ओर हटा देने से ही जीवात्मा नजर आ जाता हैं जैसे जीवात्मा के जाग्रत स्थान में आ बैठने से सिर, आंख, कान, वाणी, फेफड़े, हृदय तथा पांव ये सात अंग है, वैसे ब्राह्मण के विकसित सृष्टि के रूप में प्रकट होने पर अग्नि सिर है, सूर्य चन्द्र आंखें है दिशायें कान है, वेद वाणी है, वायु फेफड़े है, विश्व हृदय है, पृथ्वी पांव है जीवात्मा की तरह ब्रह्म के भी ये सात अंग है ।अंगो का काम संसार का भोग करना है भोग का प्रतिनिधि मुख है ।जीवात्मा के पास भोग के १६ साधन है ।ये मुख्य है जिनसे यह संसार भोगता है। ५ ज्ञानेन्द्रिय + ५ कर्मेन्द्रिया + ५ प्राण + ४ अन्तकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) ये १६ मुख है, जिनमें ये संसार का भोग करता है और ब्रह्म भी संसार के सम्पूर्ण प्राणियों के इन १६ मुखों से जाग्रत स्थान में बैठ कर बहिप्रज्ञावस्था में जीवात्मा की तरह इन प्राणियों द्वारा स्थूल–संसार का भोग कर रहा है। इसलिए वह भी स्थूल–भुक है। जाग्रतस्थान पर बैठा हुआ जीवात्मा विश्व के व्यष्टि–रूप अर्थात एक–एक व्यक्ति रूप नर–नारी के रूप में है, इसलिये जीवात्मा की यह अवस्था वैश्वानर कहलाती है ।अतः ब्रा की इस अवस्था को भी वैश्वानर ही कहा जाता है ।(माण्डूक्योपनिषद्)

जीवात्मा न स्त्री लिंग है, न पुल्लिग न नपुंसक लिंगी है, ये लिंग शरीर के है जिसे–जिस शरीर को यह ग्रहण करता है उस–उस के लिंग के साथ युक्त हो जाता है।

जड़ देवता एवं चेतन देवात्मा– ब्राह्यमणग्रन्थों में वेद मंत्रो का व्याख्यान लिखा है (त्रयस्त्रिशत) अर्थात व्यवहार के ये (३३) देवता है ।

आठ वशु ये है– अग्नि–पृथ्वी–वायु–अन्तरिक्ष–आदित्य–धौ चन्द्रमा और नक्षत्र है। इनका नाम वसु इस कारण से है कि सब पदार्थ इन्ही में बसते है, और ये ही सबके निवास करने के स्थान है ।ये जड़ देवता है११ रूद्र ये कहलाते है– ग्यारह रूद्रो में शरीर मे दश प्राण है, अर्थात प्राणदृअपान व्यान–उदान कूर्म–कृकल देवदत्त, धनन्जय और ग्यारहंवा जीवात्मा है ।क्योंकि जब से शरीर से निकल जाते है, तब मरण होने से उसके सम्बंधी लोग रोते है वे निकलते हुये उनको रुलाते है, इससे उनका नाम रुद्र है।

इसी प्रकार आदित्य बारह महीनों को कहते है क्योंकि वे सब जगत के पदार्थो का आदान अर्थात सबकी आयु को ग्रहण करते चले जाते है इसी से इनका नाम आदित्य है। ऐसे ही इन्द्र नाम बिजुली का है, कयोंकि वह उत्तम ऐश्वर्य की विद्या का मुख्य हेतु है और यज्ञ को प्रजापति इसलिये कहते है कि उससे वायु और वृष्टि जल की शुद्धी द्वारा प्रजा का पालन होता है। ये सब मिलके अपने–अपने दिव्य गुणों से तैतीस देव कहलाते है और तीन देव–स्थान–नाम और जन्म को कहते है। दो देव अन्न और प्राण को कहते है ।अध्यर्धदेव अर्थात जिससे सबका धारण और वृद्धि होती है जो सूत्रात्मा वायु सब जगह से भर रहा है, उसको अध्यदेव कहते हैं, इसमें कोई भी उपासना योग्य नहीं है योग्य तो केवल एक ब्रह्म ही है।

इस देवता विषय में दो प्रकार का भेद है एक मूर्तिमान और दूसरा अमूर्तिमान जैसे माता–पिता, आचार्य, अतिथि ये चार तो मूर्तिमान देवता है और पांचवा अमूर्तिमान है, अर्थात् उसकी किसी प्रकार की मूर्ति नही है। इस प्रकार से पांच देवकी पूजा में यह दो प्रकार के भेद जानना उचित है।

इसी प्रकार पूर्वोक्त आठ वस्तुओं में से अग्नि, पृथ्वी, आदित्य, चन्द्रमा और नक्षत्र ये पांच मूर्तिमान देव है और ग्यारह रूद, बारह, आदित्य, मन, अन्तरिक्ष, वायु द्यौ और मंत्र ये मूर्तिरहित देव है तथा पांच ज्ञानेन्द्रिया बिजली और विधिं यज्ञ से सब देव मूर्तिमान और अमूर्तिमान है। इससे साकार और निराकार भेद से दो प्रकार की व्यवस्था देवताओं में जाननी चाहिए उपासना करने योग्य एक परमेश्वर ही देव है। (ऋग्वेदादिभाण्य भूमिका

से देवता विषय)

महात्मा–देवात्मा:– महात्मा वह है जिसके सामान्य शरीर में असामान्य आत्मा निवास करती है काया की वेशभूषा का और विचित्र आवरणों का धारण महात्मा होने के आधार व लक्षण नहीं है सामान्य वेशभूषा रहन – सहन में आत्मा को महानता के स्तर तक पहुंचाना है । महात्मा का अर्थ है विशाल व्यापक आत्मा जो अपने शारीरिक, मानसिक और पारिवारिक कर्तव्यों से आगे बढ़कर विश्व मानव के उत्तरदायित्वों का वहन करने के लिये अग्रसर होता है । महात्मा अपने लिये नहीं सोचता विराट के लिये सोचता है । अपने लिये जीवित, परहित हेतु जीता और संसार को ईश्वरीय ज्ञान . वेदानुसार सृष्टिकानुसार, धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का कार्य बताता है देवात्मा वह होता है जो निम्न गुणों से जनता का मार्ग दर्शन करता है जैसे :–

१. **सोमसदः**– सोमयज्ञ, सोमवल्लो, औषधियों के विद्या में निपुण होते है।

२. **अग्निष्वातः**– जो ईश्वर भौतिक अग्नि और विबुदादि पदार्थो के गुण जानने वाले हते है।

३. **बर्हिषदः**– जो सबसे उत्तम परब्रह्म में स्थिर होकर सत्य विद्या उत्तम गुणों में स्थिर है।

४. **सोमपाः**– जो ऐश्वर्य के रक्षक और सोम महोषधिं रस पान कराकर नजता के लोग हरते है।

५. **हविर्भुजः**– जो नित्य अग्निहोत्र करके वायु व वृष्टिजल द्वारा जगत का उपकार करते है।

६. **आज्ययाः**– जो विविध ज्ञान विज्ञानरूप सार भूत विद्या के अध्ययन व अध्यापन करते है।

७. **सुकालिनः**– जो ईश्वर, धर्म और सत्यविद्या वेदों के उपदेश में जिनका समय व्यतीत होता है ।

८. **यमराजाः**– जो पक्षपात छोड़ कर सदा दुष्टो को दण्ड और वेष्टो के न्यायकारी है ये सब विशिष्ट देवात्मा की श्रेणी में आते हैं।

पं. उम्मेद सिंह विशारद
वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास–मोहकपुर, देहरादून

सदस्यता आवेदन - पत्र

(नाम, पता तथा पिन कोड, फोन नम्बर, निम्न फार्म में साफ - साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।)

नाम .... **उम्र** .... **दिनांक** ....

पता ....

शहर .... **राज्य** .... **पिन** ....

फोन .... **मोबाइल** ....

चैक / मनीऑर्डर/डी.डी. नम्बर .... **रुपये** ....

ड्राफ्ट/चैक / मनीऑर्डर ''**वैदिक राष्ट्र**'' के नाम से '**वैदिक राष्ट्र**' कार्यालय - 219, संचार नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016 अथवा बैंक ऑफ महाराष्ट्र - शाखा: कनाड़िया रोड़, इन्दौर में सीधे खाता क्रं. 6003657384, IFSC Code: MAH0001396 में जमा कराएं।

मनुस्मृति में क्या है

मनुस्मृति ने धर्म के निम्न दस लक्षण बताये हैः—

1. धृति, 2. क्षमा, 3. दम, 4. अस्तेय, 5. शौच, 6. इन्द्रिय—निग्रह, 7. धी, 8. विद्या, 9. सत्य, 10. अक्रोध। (1) इनमें से पाँचवाँ स्थान शौच अर्थात् अन्तः और बाह्य शुद्धि का है। शुद्धि का उपाय बताते हुए मनु कहते हैः—

'सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः।'(2)

सब प्रकार की शुचियों में अर्थ की शुद्धता सबसे बढ़कर है। जो अर्थ की दृष्टि से शुद्ध है, वही शुद्ध है, लेकिन जिसने अपने को मिट्टी, जल आदि साधनों से शुद्ध किया है, वह शुद्ध नहीं है।

एक अन्य स्थल पर मनु कहते हैं कि वेद का स्वाध्याय और उपदेश, दान, यज्ञ, यम, नियमों का आचरण और तप का अनुष्ठान— ये सभी उत्तम आचरण, जिसकी भावना शुद्ध नहीं है, उसे कोई लाभ नहीं पहुँचा सकतेः—

'वेदास्त्यागाश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च।
न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित्।'(6)

महाभारत में युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए भीष्म पितामह कहते हैः—

'अर्थस्य पुरुषो दासः दासस्त्वर्थो न कर्हिचित्।
इति सत्यं महाराज! बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः।'

हे युधिष्ठिर! मनुष्य अर्थ का दास है, अर्थ किसी का दास नहीं है। इसी अर्थ के कारण मैं कौरवपक्ष से बँधा हुआ हूँ। यहाँ भीष्म नीति और अनीति को जानते हुए भी सत्य का, जो युगधर्म भी है, साथ देने से कतरा रहे हैं। इसका कारण जो मनु ने बताया है, वही है कि राजा का अन्न अन्य किसी धन की अपेक्षा हजार गुना अधिक मन को दूषित कर देता है। आज का मनुष्य पहले की अपेक्षा अधिक शिक्षित होते हुए भी अधिक पथभ्रष्ट होगया है, इसके मूल में अर्थ की पवित्रता को भूल जाना है।

एक नीतिकार का कथन है कि मूर्ख लोगों ने थोड़े से लाभ के लिये वेश्याओं के समान अपने आपको सजाकर दूसरों के अर्पण कर दिया हैः—

'अबुधैरर्थलाभाय पण्यस्त्रीभिरिव स्वयम्।
आत्मा संस्कृत्य संस्कृत्य परोपकारिणी कृतः।'

अब प्रश्न उठता है कि क्या हमें धन की उपेक्षा कर देनी चाहिये? कदापि नहीं, क्योंकि वेदशास्त्र हमें समृद्ध और सुखमय जीवन यापन करने का उपदेश देते हैः—'पतयः स्याम रयीणाम्।'(7) लेकिन जिनके पास धन है, उन्हें धन का उपयोग किस प्रकार करना चाहिये, ऋग्वेद कहता हैः—

'मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।'(8)

जो स्वार्थी व्यक्ति अकेले ही सब कुछ खाना चाहता है, मैं सत्य कहता हूँ कि यह उसकी मृत्यु है, क्योंकि इस प्रकार खाने वाला व्यक्ति न अपन भला कर सकता है और न मित्रों का। केवल अपने ही खाने—पीने का ध्यान रखने वाला व्यक्ति पाप का भक्षण करता है।

आजीविका के चलाने का ऐसा कौन—सा मार्ग है, जिस पर चलकर मनुष्य ससम्मान जीवन यापन कर सकता है। इस विषय में नीतिकार का मत हैः—

‘अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलमन्दिरम्।
अनुल्लङ्घय् सतां मार्गं यत् स्वल्पमपि तद्बहु।’

दूसरों को सन्ताप दिये विना, दुष्ट के आगे सिर झुकाये विना तथा सन्मार्ग का उल्लङ्घन न करते हुए जो भी प्राप्त हो जाये, वही धन स्वल्प होते हुए भी बहुत है।

यदि व्यक्ति उक्त मार्ग का अनुसरण करता है, तो उसका धन पवित्र धन है। इस प्रकार के अन्न का उपभोग करने वाला व्यक्ति, यदि साधना पथ पर बढ़ता है, तो उसे अवश्य सफलता मिलती है।

निजी अनुभव से—धन सभी कमाते है और धनवान भी हो जाते है। किन्तु धन कितना अर्थ शील है यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। कम कमाए किन्तु अर्थशील धन कमाए। अर्थशील धन सदेव फलित होता है।

मनुष्य के जीवन में समाचार-पत्र

समाचार पत्र में जितने भी समाचार विज्ञापन आदि छपते हैं, क्या आप उन सब को आरंभ से अंत तक पढ़ते हैं? नहीं पढ़ते । शायद कोई व्यक्ति भी पूरा समाचारपत्र नहीं पढ़ता होगा। क्योंकि उस समाचार पत्र में सब प्रकार की बातें होती है। और एक व्यक्ति की सब क्षेत्रों में रुचि नहीं होती। इसलिए समाचारपत्र पढ़ने वाले प्रायः सभी लोग समाचार पत्र को देखते तो हैं, परंतु पूरा नहीं पढ़ते।

वे लोग यह देखते हैं कि इस समाचारपत्र में कौन सी चीज मेरे काम की है, जिसमें मुझे रूचि है, और जिसको पढ़ने से मुझे लाभ होगाइसलिए अपने काम की चीजें हर व्यक्ति समाचार पत्र में से पढ़ लेता है। बाकी बातों पर ध्यान नहीं देता, छोड़ देता है।

ऐसे ही facebook पर बहुत सी बातें लिखी रहती हैं, पर आप सारी बातें नहीं पढ़ते whatsapp पर भी बहुत से मैसेज आते हैं, पर आप सारे नहीं पढ़ते। जिनमें रुचि होती है उनको पढ़ते हैं, जिनमें रुचि नहीं होती, उनको छोड़ देते हैं।

तो जीवन में भी ऐसा ही करना चाहिए। हम और आप अपने जीवन में शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहना र मानसिक रूप से भी प्रसन्न रहना चाहते हैं। तो यहाँ पर भी यही नियम लागू होगा। अर्थात शारीरिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में आपको सभी बातों पर ध्यान देना होगा, जैसे कि रात्रि को समय पर सोना, सुबह समय पर जागना, व्यायाम करना, हवन यज्ञ करना, संयम से भोजन खाना, शाकाहारी भोजन खाना, ब्रह्मचर्य का पालन करना इत्यादि । तथा मानसिक प्रसन्नता के लिए आपको उत्तम कर्म तथा दूसरों के अच्छे व्यवहार पर तो ध्यान देना होगा, परंतु दूसरों के दुर्व्यवहारों या दोषों से आपको उपेक्षा करनी पड़ेगी। उनकी व्यर्थ की बातों पर बिल्कुल भी ध्यान न देवें उनके द्वारा लगाए जाने वाले झूठे आरोपों की जरा भी चिंता न करें। इससे आपका मानसिक स्तर ठीक बना रहेगा।

।। ओ३म्।।
www.vaidikrashtra.com
वैदिक राष्ट्र Vaidik Rashtra
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
वयं राष्ट्रे जागृयामः
आर्य जगत् के संपूर्ण सामाचार अब एक ही स्थान पर...
आर्य जगत की संस्थाओं, गुरुकुलों, आश्रमों, एवं आर्य समाजों की जानकारी हेतु...
वैदिक विद्वानों के साक्षात्कार, प्रवचन, लेख, ऑडियो एवं वीडियो हेतु...
वैदिक विद्वानों, आर्य धर्माचार्यों (पुरोहित) एवं भजनोंपदेशक के कार्यक्रमों हेतु...
वैदिक पत्र/पत्रिका, प्रकाशक, वैदिक साहित्य एवं वैदिक सिद्धांतों हेतु ....
सर्वजातीय वैवाहिक संबंधों हेतु....
Mob. 9977987777, E-mail: vaidikrashtra@gmail.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. एवं आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर

के तत्वावधान में 196वाँ महर्षि दयानंद सरस्वती जन्मोत्सव के अवसर पर

सम्मानीत करते हुये चित्रमय झलकियाँ

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. एवं आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर
के तत्वावधान में 196वाँ महर्षि दयानंद सरस्वती जन्मोत्सव के अवसर पर
सम्मानीत करते हुये चित्रमय झलकियाँ

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. एवं आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर

के तत्वावधान में 196वाँ महर्षि दयानंद सरस्वती जन्मोत्सव के अवसर पर

सम्मानीत करते हुये चित्रमय झलकियाँ

सर्वजातीय परिणय स्मारिका मंगाएँ

अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, प्रौढ़ आदि

कार्यालय- आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर

मो. 9977987777, 9977967777

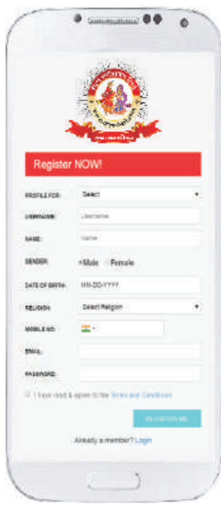

रिश्ते सर्वजातीय रिश्ते

अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, प्रौढ़ आदि प्रत्याशी

GET IT ON Google Play

गूगल प्ले स्टोर पर जाकर

aryavivah

App Download करें

Mob. 8815068673

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. एवं आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर

के तत्वावधान में 196वाँ महर्षि दयानंद सरस्वती जन्मोत्सव के अवसर पर

वेदकथा एवं राष्ट्ररक्षा महायज्ञ के अवसर पर की चित्रमय झाकियाँ

स्वामी सर्वानंद जी महाराज

आचार्य संजीव 'रुप'

आचार्य प्रभा मित्र

डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

यादवेन्द्र शास्त्री

पंनीरज शर्मा

RNI Registration No- RNI/MPHIN/2009-28723 March 2020 Postal Registration No.MP/IDC/1533/2017-19

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. एवं आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर
के तत्वावधान में 196वाँ महर्षि दयानंद सरस्वती जन्मोत्सव के अवसर पर
सम्मान समारोह

स्वामी सर्वानंद जी महाराज को शाल एवं प्रतीक चिन्ह (महर्षि दयानंद का चित्र) को भेंट करते हुये आचार्य संजीव रुप, कैलाश खण्डेलवाल, श्रीमती स्नेहलता हांडा

आचार्य संजीव रुप शाल एवं प्रतीक चिन्ह (महर्षि दयानंद का चित्र) को भेंट करते हुये . श्रीमती गायत्री सोलंकी, कैलाश खण्डेलवाल, छोटे लाल खरे, डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार एवं श्रीमती गायत्री सोलंकी को शाल एवं प्रतीक चिन्ह (महर्षि दयानंद का चित्र) को भेंट करते हुये, स्वामी सर्वानंद जी महाराज, कैलाश खण्डेलवाल, आचार्य संजीव रुप, डॉ. भरत कुमार 'भानु'

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार द्वारा आर.टेक. ग्राफिक्स 864/9, नेहरु नगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 219, संचार नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड, इन्दौर से प्रकाशित। न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा। संपादक : आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

मुद्रण दिनांक– प्रत्येक माह की 28 तारीख प्रेषण दिनांक– प्रत्येक माह की 30 तारीख प्रेषण कार्यालय– आर.एम.एस. इन्दौर डाकघर - 452001